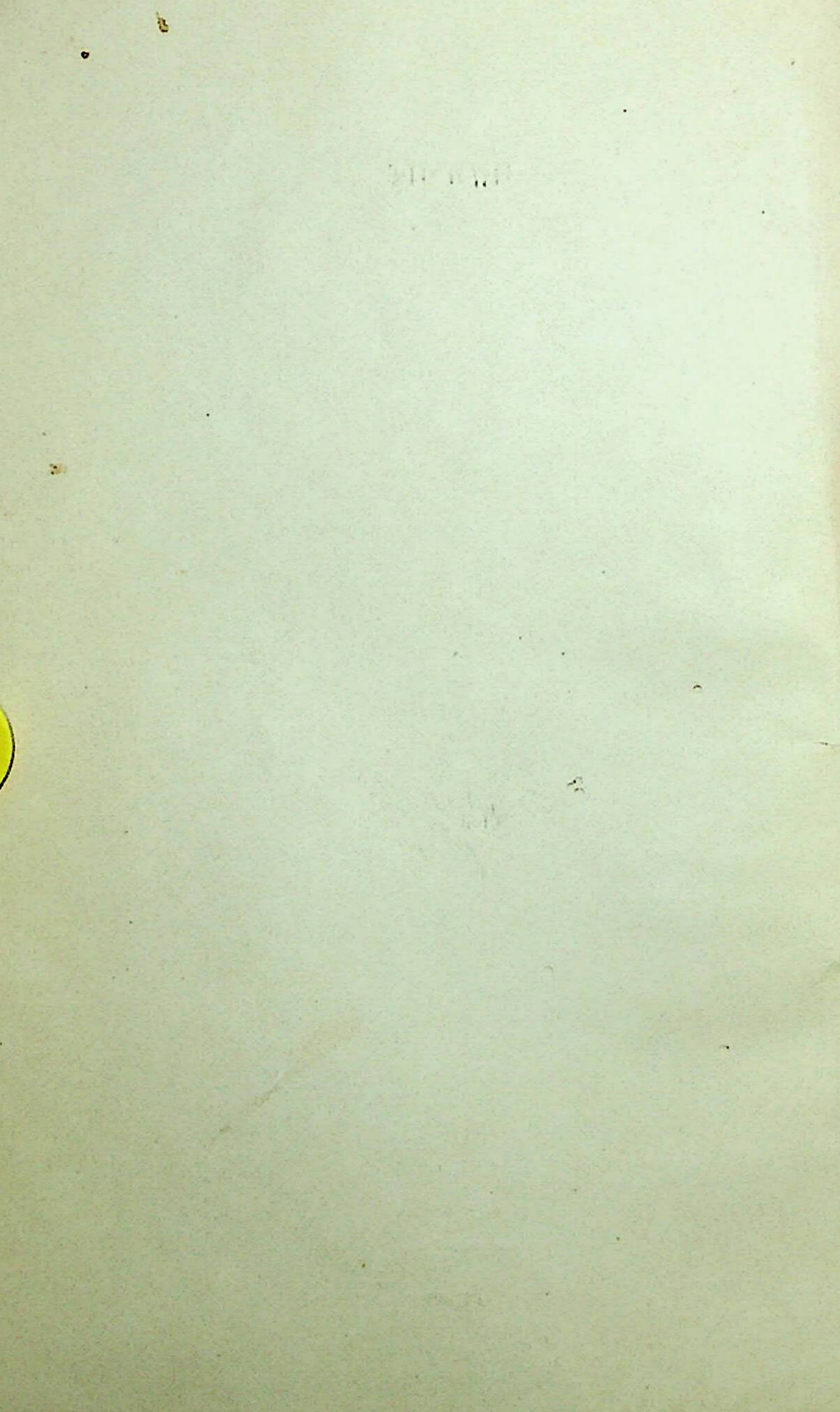
मंगळचार

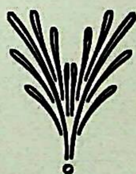


मङ्गलचार



मंगलचार

राजस्थानी संस्कार
लोकगीत



रचयिता
रमेश मोरोलिया

प्रकाशक, चित्रकार, रचयिता
रमेश मोरोलिया
५८/४, बिरहाना रोड, कानपुर २०८००१
दूरभाष : ६६५६६।६६०७०

प्रथम संस्करण
अक्षय तृतीया
सोमवार २६ अप्रैल, १९८२

रचयिता की आज्ञासे ही फिल्मों, रिकार्डिंग कम्पनियों में रचनायें प्रयोग की जा सकेंगी। आकाशवाणी, दूरदर्शन एवम् सार्वजनिक कार्यक्रमों में कलाकार स्वेच्छा से संगीतबद्ध गायन कर सकते हैं।

वितरक
साहित्य निकेतन
३७/५०, गिलिस बाजार
कानपुर-२०८००१

मूल्य : १५) रु०
पन्द्रह रुपये मात्र

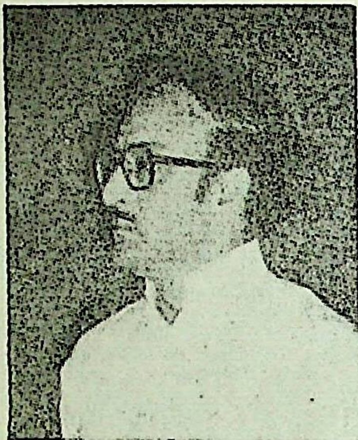
मुद्रक : जनवाणी प्रिण्टर्स एण्ड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड
५७४, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-३

सहधर्मिणी

गीता

को

सस्नेह भेंट



पं० रमेश मोरोलिया
बी० काम०, संगीत प्रभाकर।

* व्यवसाय के साथ काव्य, साहित्य एवं कला में अभिरुचि।

* राजस्थानी एवम् पूर्वी लोकगीतों, भजनों के आकाशवाणी तथा दूरदर्शन लखनऊ-जयपुर के गायक।

* अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, उ० प्र० शाखा के प्रधानमंत्री।

* भू० पू० सदस्य, नगर महापालिका, कानपुर। कांग्रेस आई के युवावस्था से सक्रिय कार्यकर्त्ता एवं पदाधिकारी।

* नगर की अनेक व्यावसायिक, सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, क्रीड़ा एवं धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी।

* संगीत, चित्रकला तथा सामाजिक कार्यकलापों में विशेष रूप से सम्मानित एवं पुरस्कृत।



स्वर-संधान : प्राक्कथन

श्री रमेश मोरोलिया ने अपने बचपन के दिन राजस्थान की सोंधी मिट्टी में खेलकूद कर बिताये हैं। वे स्वयं यह अनुभव करते हैं कि राजस्थान के सांस्कृतिक संस्कार, उनके रोम-रोम में रमे हुए हैं। संस्कार की इस सुदृढ़ नींव पर खड़े होकर, लोकगीतों के स्वरूप के अनुरूप उन्होंने ऐसे गीतों का सृजन किया है, जो राजस्थान में और राजस्थान से बाहर प्रवासी लोक जीवन में गंगा की तरह बह रहे हैं। लोगगीतों के मधुर स्वरों का पान, उन्होंने अपनी मां के आंचल तले, बहती हुई पावन दूध-धारा के साथ किया है, अत: शब्द और स्वर का मिलन, उनकी पुस्तक "मंगलचार" में अभूतपूर्व है। कवि-हृदय में गीतों की यह रसधारा, श्रोताओं को कैसे आत्मविभोर कर देती है, यह मैंने स्वयं अनुभव किया है।

श्री मोरोलिया का मधुर और आकर्षक व्यक्तित्व, उनके गीतों को ऐसा वर्चस्व प्रदान करते हैं कि यह अन्तर समझना बहुत मुश्किल हो जाता है कि श्रोता के सामने, स्वयं कवि खड़ा है या मूर्त होकर उसका अपना लोकगीत। वे राजस्थानी जीवन की दैनिक क्रिया-प्रक्रियाओं से इतने अधिक सुपरिचित हैं कि झीनी से झीनी भावाभिव्यक्ति भी उनसे असम्पृक्त नहीं हो पाती। भाई और बहन के प्यार में जो अनुपम पावनता है, उसका एक उदाहरण देखिये :—

भातँ भरण मेरो बीरो आयो,
तो, आंगण मंगलचार,
वधाई मेरे वीर की।
बाबुल मुळकै मोद सूँ जी,
तो, जामण हुळसै हेत।
घणै चाव सूँ बेल बधाई,
तो, मोती-निपज्या खेत। वधाई मेरे वीर की।।

गीत सीधा-सादा है, लेकिन कलेजे में चोट करता है। भात भरने के लिये भाई आया है, और उसके आगमन के साथ-साथ, मां और बाबुल के हृदय में स्नेह का जो संचार हो रहा है, वह वर्णनातीत है। जो लोग इस नाजुक घड़ी की महत्ता को समझते हैं, वे अपने आंसू नहीं रोक सकते हैं। कहते हैं कि जब भी भाई बहन को द्वार पर खड़े होकर चूनड़ ओढ़ाता है, तो सूर्य भगवान का भी रथ क्षण भर के लिये रुक जाता है। श्री मोरोलिया का यह गीत कुछ ऐसा ही जादू लिये हुए है।

नाना मामा जी भरण आया भात जी
नानी मामी ल्यायी चूनड़ लाल,
रंगीलो चंग बाजणो ।।

राजस्थान के पुराने लोकगीतों में मिठास बरकरार है, लेकिन कुछ संस्कारहीन पेशेवर लोगों ने, उनके स्वरूप को विगाड़ दिया है। यहाँ तक कि लोकधुन के आधारभूत स्वर भी भ्रष्ट कर दिये गये हैं। इससे लोक-संस्कृति के सरल सौन्दर्य में अरूपता आ गयी है। अरुचिकर स्वर-संघात की वजह से, मूलभूत राग-रागिनी भी, विकृत हुई है। राजस्थान के मारवाड़ी गीत जो आजकल विवाह आदि अवसरों पर गाये जाते हैं, वे अपना वास्तविक रस खो चुके हैं। उनमें न राग-सौन्दर्य होता है, न ताल-सौन्दर्य ही। लेकिन श्री रमेश मोरोलिया ने अपने नव-सृजित गीतों में राजस्थान की धरती के मिठास को जीवित रखा है। सबसे बड़ी बात यह है कि वे स्वयं इन गीतों को गाते हैं और प्रत्येक धुन को इस ढंग से सँवारते हैं कि उनके गीत लोक-गीतों से भिन्न नहीं दिखाई देते। विवाह के समय वधू को सजाया जा रहा है। कवियों ने सोलह श्रृंगार करते-करते न जाने कितना कुछ कह डाला है, लेकिन इतना राजस्थानी रंग में भीगा हुआ स्वाभाविक वर्णन किसी ने आज तक नहीं किया —

भाभी रो अमर सुहाग, नणद बाई मंगळ गावै।
म्हारै दिवलै री जोत, सुहागण लाड लडावै।।
कांगसियै सैं केस सजावां।
रस सिंदूरी मांग भरावां।।
माथै टीको, काजळ नैणां—
होठां राचै पान, सुहागण रूप लुभावै।।
सिर पर फीणी, बोर लगावो,
नथ बेसर को रास रचावो,
कानां मैं कुंडल री आभा—
गळपटियो गळ बीच, सुहागण दिपै दिपावै।।
चूनड़ ओढ़ो वेल वधावो,
लाड बहू थे, सब सुख पावो,
मान बढ़ाज्यो, दोन्यू कुल रा—
करज्यो सुगणां काज, सुहागण मोद मनावै।।

राजस्थानी श्रृंगार में पुराने जेवरों की महत्ता वधू के सुहाग से जुड़ी हुई है। यह हर किसी के वश की बात नहीं है कि वह इस सौन्दर्य की आत्मा को पहिचान कर वास्तविक बिम्ब

उपस्थित कर सके। श्री मोरोलिया सौन्दर्य-पारखी भी हैं। शब्दों के धनी भी हैं। और सबसे बड़ी बात यह है कि वे अर्थ-चित्रण भी सहज भाव से कर देते हैं। कोई रंगकर्मी या चित्र-कार स्वर के अभाव में अपने चित्रों को बोलने पर विवश नहीं कर सकता है, लेकिन श्री मोरोलिया के चित्र बोलते हैं, तालबद्ध होकर गाते हैं, नाचते हैं।

श्री रमेश मोरोलिया अवधी भाषा को भी मातृभाषा की तरह लिखते हैं, पढ़ते हैं, और उसमें गीतों का सृजन कर उन्हें उत्तरप्रदेशीय मिठास में घोल कर गाते भी हैं। उनकी पुस्तक "करे-जवा कै कोर" मैंने देखी है, पढ़ी है। साहित्य का विद्यार्थी होने के नाते, उनके अवधी गीतों को सुनकर तो मैं मंत्र-मुग्ध हो जाता हूँ। अब "मंगलाचार" पुस्तक में, उनके राजस्थानी गीतों की आभा ही न्यारी है। वे संस्कारगत अधिक हैं। उनमें अनुभूति की तीव्रता है। एक गीत में वे वधू को "सूरजमुखी का फूल" बताते हैं, तो वर को सूर्य बताते हैं जिसे देखकर ही सूरजमुखी का फूल मुस्कराता है, खिलता है, अंगड़ाता है, विकसित होता है।

बन्नी सूरजमुखी को फूल,
सूरज बन्नो, देख खिलै।

केसर वरणी चम्पा नयनी,
ऊदी घटा-सा केस।
गालां छाई ऊषा आभा
पचरंग थीरा वेस।।

बन्नी इन्द्रधनुष को रूप,
अम्बर बन्नो जाय मिलै।
बन्नी सूरजमुखी रो फूल,
सूरज बन्नो देख खिलै।।

कुंडल चिलकै, चुड़लो खणकै,
पायल रुणझुण नाचै।
बिछिया वाजै, बिंदिया मुळकै,
हंसली खिलखिल हांसै।।

बन्नी चिलक चमकती बीज,
वादल बन्नों गलै सूं मिलै।।
बन्नी सूरजमुखी रो फूल,
सूरज बन्नो देख खिलै।

गीत लम्बा है और कई पंक्तियां ऐसी हैं, जिन्हें उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता। गीत में कहीं-कहीं हिन्दी के नवीन शब्द भी हैं, किन्तु राजस्थानी ने हिन्दी को वहुत कुछ दिया है, अतः राजस्थानी यदि हिन्दी से कुछ ले तो यह न्यायोचित है। सामासिक संस्कृति का ध्येय भी यही है। लेकिन यह मानना होगा कि यह चित्रात्मकता अत्यंत मौलिक है।

श्री रमेश मोरोलिया की पुस्तक "मंगलचार" की पाण्डुलिपि मेरे सामने है। इसमें से वहुत से उद्धरण देने को जी चाहता है, किन्तु समय का अभाव है और स्थान का भी। लेकिन यह बताना जरूरी है कि ये लोकगीत शैली में लिखे गये गीत छन्दवद्ध नहीं हैं। इनका सृजन ऐसा है, जो गाया जा सके। अतः गेयता ही इसका काव्यात्मक गुण है। मंगलाचार पुस्तक में गीतों का सम्पन्न भाग वह है जो राजस्थानी लोकगीतों से साम्यभाव रखता है। विवाह के समय जव भंवर पड़ते हैं, तो प्रत्येक "फेरा" कन्या के सम्वन्ध को वर के साथ सुदृढ़ करता है, और मैके की ओर से उसे पराई मान लिया जाता है। यह दृश्य वहुत करुणामय होता है। गीतों की लय में एक अजीव-सी वर्फीली चीत्कार हिचकियां भरने लगती हैं। श्री रमेश मोरोलिया की प्रतिभा का चमत्कार यहाँ भी देखिये :—

पहलो तो फेरो बाई जद लीन्यो, भैनड़ भुवा होई उणमणी।
आंख्यां में चिळक्या हिवड़ै रा मोती, हाथां में राखी पलणै पली ।।
दूजो तो फेरो वाई जद लीन्यो, ताऊ चाचाजी निरखै वाग नै।
वागां री कोयल बोलैगी इव कद, दीजै संदेसो उड़तै काग नै ।।
तीजो तो फेरो वाई जद लीन्यो, दादी वावोजी हद सीख दी।
वाई सासरियै मैं बोलज्यै मीठी, हेठी कराजै मत माय रीं ।।
चौथो तो फेरो वाई जद लीन्यो, मायड़ आंख्या झड़ लागिया।
बनखंड री मैना होई पराई, दूध ना लाजै वड़-भागिया ।।

मैं नहीं समझता भारतीय कविता में करुणा की और वात्सल्य की ऐसी वर्षा अन्य किसी भारतीय भाषा में, इतनी उमड़-घुमड़ कर आंसुओं की सरिता वहाने में समर्थ हुई है। राजस्थानी लोकगीत, श्रेष्ठ काव्य के जन्मदाता हैं। ऐसी रसधारा में डूबनेवाले सहृदय लोग अव वहुत कम हैं। आधुनिक राजस्थानी समाज में शिक्षित युवतियाँ इस सांस्कृतिक धरोहर से असम्पृक्त होती जा रही हैं। इस सांस्कृतिक शून्यता का वुरा फल भी सामने आ रहा है। राजस्थानी महिलाएँ अपने को अन्य भाषा-भाषी महिलाओं से हीन भी अनुभव करती हैं। उन्होंने अपनी ही परम्परा से अपने को तोड़ लिया है। श्री रमेश मोरोलिया के ये आधुनिक लोकगीत जो परम्परा से भी जुड़े हुए हैं, आधुनिक राजस्थानी समाज की शिक्षित महिलाओं को उनकी संस्कृति की सम्पन्नता आज भी प्रचुर मात्रा में दे सकते हैं। ये गीत परम्परा से जोड़ते हैं और आधुनिक परिवेश में भविष्य को उज्ज्वल बनाते हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि राजस्थान वासी इससे लाभान्वित होंगे।

श्री मोरोलिया सृजनशील व्यक्ति हैं। सांस्कृतिक पुरुष हैं। व्यवसाय से सम्बद्ध रह कर भी सरस्वती पुत्र हैं। उनके परिवार में उनकी धर्मपत्नी सौ० गीता, पुत्र राजीव और अनुराग एवं पुत्री ऋचा सभी साहित्य और संगीत में सरावोर हैं। यह विशेषता उन्हें राजस्थान की धरती की सुगन्ध से ओतप्रोत रखती है। मुझे विश्वास है, श्री मोरोलिया ऐसी और पुस्तकें लिखकर निरन्तर अपने लेखन को परिमार्जित करेंगे, और अन्य राजस्थानवासियों को भी सद्प्रेरणा देंगे।

मेरी शुभ कामनाएँ हमेशा उनके साथ हैं।

मेघराज मुकुल

वी० १४, विवेकानन्द मार्ग
सी० स्कीम, जयपुर (राजस्थान)

अन्तर-उद्गार

राजस्थान के लोकगीतों के स्वरूप को जीवन्त रखने के लिये अनेकों संग्रहकर्त्ताओं ने पुराने प्रचलित गीतों को सुचारु रूप से व्याख्यासहित प्रकाशित करवा कर आनेवाले साहित्यकारों के लिये विपुल निधि संजोदी हैं। आधुनिक भारत के राजस्थानी साहित्यकारों ने भी विभिन्न प्रांतों के परिवेश में नये-पुराने संस्कारों के संगम के बीच अपनी कल्पना को गीतों तथा लोकगीतों के रूप में सजाकर साहित्य-कोष में वृद्धि की है।

विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर गाये जानेवाले गीतों के सहज भावों की कब, कहाँ और किसने रचना की थी, विवेचना करना सम्भव नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि समयानुकूल पारिवारिक प्रसंगों के समय जो भाव लोकगीतों के माध्यम से प्रकट हुए उनकी हृदयस्पर्शी धुनों ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया। समय बीतता गया और वे गीत मांगलिक अवसरों की परिपाटी बन गये। व्यावसायिक स्तर पर गानेवाली महिलाओं ने अशिक्षा के कारण शब्द और भावों का अपभ्रंश कर दिया, धुनें ज्यों की त्यों उतार-चढ़ाव पर चलती रहीं, और आज के शिक्षित राजस्थानी-समाज की महिलाओं ने इन लोकगीतों में शुद्धता और साहित्यिक स्वरूप की आकांक्षा के परिणामस्वरूप कवि हृदयों ने नये गीतों की रचनाओं को स्वरूप देना आरम्भ कर दिया। नई धुनों के साथ-साथ पुरानी धुनों के आधार को भी नई रचना का माध्यम रक्खा गया।

मेरा जन्म तो नगर कानपुर उत्तरप्रदेश में ही हुआ, लेकिन राजस्थानी संस्कारों का संयोग बना रहा। बगड़, रतनशहर, जिला झुंझनूं, राजस्थान हमारे पूर्वजों का गाँव है, यह शेखावाटी का क्षेत्र कहलाता है। बचपन के दिन इसी सोंधी माटी में खेल-कूद कर बीते, वहाँ के रहन-सहन, पहराव-ओढ़ाव, खान-पान और सांस्कृतिक संस्कार रोम-रोम में रम गये। ढलते दिन और भोर की अरुणाई में गुँजती चक्की की गमक और पनघट की रनक-झनक के बीच जो सुरीले स्वर घर-आंगन से ध्वनित होते थे, आज भी स्थाई से हैं। ऐसा मन मोह गये कि मेरा कवि मुखर हो उठा। रचना-प्रवाह अविरल बह चला।

पुराने लोकगीतों ने तो प्रभावित किया ही, साथ ही मेरी पूज्य माताजी श्रीमती त्रिवेणी देवी एवं सहधर्मिणी सौ० गीता भी निरंतर प्रेरणा का स्रोत रहीं। माता से लोकधुनें और पत्नी से साहित्यिक अभिरुचि के संयोग ने निरंतर उत्साहित किया। मेरे स्वर्गीय श्रद्धेय पिताजी पं० रामदेवजी मोरोलिया का अनवरत प्रयास रहता था कि मैं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुछ करूं, अतएव साहित्य, संगीत, कला, व्यवसाय, राजनिति और समाजसेवा आदि क्षेत्रों में उनकी आकांक्षा के अनुरूप कार्य करने का प्रयत्न करता रहता हूँ।

अपने भावों के माध्यम से कुछ मांगलिक प्रसंगों की गीत रचनाएँ प्रस्तुत कर रहा हूँ, गीतों को क्रम से कैसेट-टेप में संगीत-बद्ध भी कर दिया है। मांगलिक अवसरों, आकाशवाणी और दूरदर्शन पर इन गीतों की सराहना हुई, तो मेरा साहस हुआ कि ये रचनाएँ अवश्य ही जन-मानस को प्रभावित कर सकेंगी।

आधुनिक युग में राजस्थानी शिक्षित महिलाएँ और पुरुष अपनी भाषाकम और हिन्दी अधिक जानने लगे हैं, अतएव इन गीतों को सरल भाषा के माध्यम से रचा गया है।

मेरी·पूर्वी लोकगीतों की पुस्तक "करेजवा कै कोर" को जिस सहृदयता से पाठकों ने अपनाया है, आशा है 'मंगळाचार' को और अधिक स्नेह मिलेगा।

अक्षय तृतीया
सोमवार २६ अप्रैल, १९८२

रमेश मोरोलिया



विषय-सूची

भूल-सुधार



पृष्ठ-संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५	४	साई	सवाई
१९	३	नल	नवल
१९	४	सज ज	सजधज
१९	६	कंर	कंवर
२०	१	चाब	चाव
२१	७	चा	चाव
२१	१०	बदन	बंदन
२१	१३	मैनड़	भैनड़
२२	३	धाई	बधाई
२२	४	जाभण	जामण
२२	६	दे	देवै
२२	८	बनो	बनी
२३	९	जता	जतावै
३६	६	भरैंगी	भरैंगो
३६	७	पुन्दर	सुन्दर
३९	१	बन्ना बासंती बयार	बन्ना—बासंती बयार
३९	६	रोमास	रो मास
४१	२	गुलावै	गुलाबै
४३	१	बन्ना रंगीचो चंग बाजणो	बन्ना—रंगीलो चंग बाजणो
४४	७	मैणां	भैणां
४७	१	बन्ना केसररंग फुहार	बन्ना—केसररंग फुहार
५३	१२	बारै	वारै
५५	५	ल्यायो	ल्यायी
५६	१०	उव्या	उभ्या
६३	४	को	की
६६	६	तागड़ो	तागड़ी

पृष्ठ-संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६८	४	आरती	आरतो
६८	४	सगणी	सुगणी
८९	८	को	की
९०	३	को	की
९१	३	चंच	चुंच
९३	९	को	की
१०७	१	द्वार चार गीत बनड़ो आयोए	द्वार चार गीत—बनड़ो आयोए
१०९	१	द्वार चार हस्ती चढ़योबर	द्वार चार—हस्ती चढ़योबर
१११	१	द्वार चार को गीत रोबीलोभाल	द्वार चार को गीत–रोबीलोभाल
१११	४	आरती	आरतो
११३	४	चिलक	चिलकै
११७	१	फेरों को गीत	फेरां को गीत
१२१	२	कसर मवो	केसर मेवो
१२२	५	कारण	कारणै
१३१	६	कसर	केसर
१३५	१९	चाच	चाचा
१४०	२०	स	सै
१५१	६	रोतो	रीतो
१५३	८	बोल्यूं	भोल्यूं
१७०	२	दद	हद

देवी-देवता

का

गीत



गणपति-वन्दना

गजानन्द थानै नित उठ ध्याऊँ।
उमा सुत थारा ही गुण गाऊँ।
सुबरण थाल सैं तारूँ[1] आती
केसर तिलक करूँ,
पंच फूल रो हार पहराऊँ,
मन में थारो ध्यान धरूँ।

रिध सिद्ध दायक थारा गुण गाऊँ।
गजानन्द थाने नित उठ ध्याऊँ।

मोदक पाक रो भोग लगाऊँ,
गौरी तनय[2] गणेश।
मंगल कारज पूरण करियो,
बिघन आवै नहीं लेश[3]।

विनायक थारे शरण जाऊँ।
गजानन्द थानै नित उठ ध्याऊँ।

---

१. तारूँ=उतारूँ, २. तनय=पुत्र, ३. लेश=थोड़ा-सा भी।

थारे भरोसे पै यो जग सारो,
सबसै पैली सुमिराँ।
बिगड़्या काम बणै पल भीतर,
मनरा दुख सब बिसराँ।

महापति सब इच्छा फल पाऊँ।
गजानन्द थानै नित उठ ध्याऊँ॥

चोर



बालाजी बजरंगबली

थारो मंगलकारी रूप,
बालाजी बजरंगबली ।।
थारै हिय मै बिराजै राम,
पवन सुत भोतबली ।।

लांघ्यो सागर पलमांहि
पूंछ सूं लंका जली ।।
थारो मंगलकारी रूप,
बालाजी बजरंग बली ।।

लछमण नै लियो जिवाय
प्याय संजीवन डली ।।
थारो मंगलकारी रूप
बालाजी बजरंग बली ।।

म्हारा काज संवारो नाथ,
खिलावो हियैरी कली ।।
थारो मंगल कारी रूप
बालाजी बजरंग बली ।।

थारी होवै जै-जै कार,
भुवन और गली - गली ।।
थारो मंगल कारी रूप
बालाजी बजरंग बली ।।



गौरीमाता

ऐ गौरी माता चरण थारा सुखदाई ।।
भवानी अम्बे भोत थारी सकलाई ।।[1]

अष्ट भुजा मइया थे वरदानी,
सीतल सील सुचारु सुनैनी,

दुर्गे कल्याणी थारी छिब हियमांई ।।
ऐ गौरी माता चरण थारा सुखदाई ।।

फरै लाल धजा[2] मां थारी,
घंटा गूज करै नित भारी,

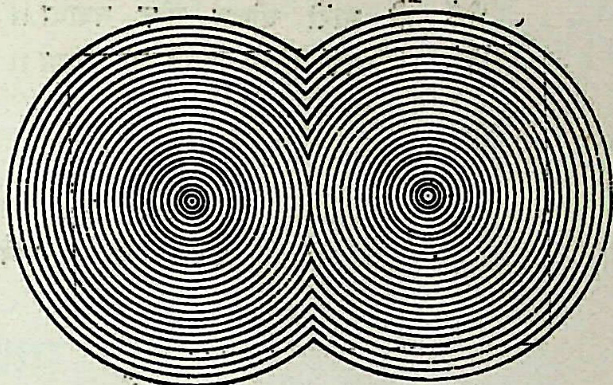
जगतारणी देवी थारी कीरति गाई ।।
ऐ गौरी माता चरण थारा सुखदाई ।।

---

१. सकलाई=सिद्धियुक्त कृपा २. धजा=ध्वजा

सुमिर ध्यान धर काज संवारा,
मां थांपै म्हैं सरबस वारां,

दयो सारा आसीस जोत थारी होय सवाई ।।
ऐ गौरी माता चरण थारा सुखदाई ।।



भैरुँ जी

भैरूँ जी थारै धोक देबानै म्हे आया ।।
सकल सुख पाया चरण थारा भाया ।।

चढाऊँ थारै तेल सिंदूर सुरंगो,
मनाऊँ आनन्द रंगाऊँ पचरंगो,

भैरूँ जी थारा दरस सुदिन[1] यो ल्याया ।।
भैरूँ जी थारै धोक देबानै म्हे आया ।।

चुण चुण फूल चढ़ाऊँ बाबा थारै,
मंगल काज करां म्हे थारै स्हारै[2]

---

१. सुदिन=शुभदिन   २. स्हारै=भरोसे

भैरूँ जी थारी चौखट सीस नवाया ।।
भैरूँ जी थारै धोक देबानै म्हे आया ।।

पेड़ां रो भोग लगै थारै देवा,
सेवा करै वो पावै मेवा,

भैरूँ जी करो किरपा जग थानै ध्याया ।।
भैरूँ जी थारै धोक देबानै म्हे आया ।।



खाटूवाला श्याम

खाटूवाला श्याम सकल सुख दायक ।।
देवां रा देव गणां रा गण नायक ।।

मन में बिराजै बाबो मढ़[1] मै बिराजै,
द्वार पै दाता थारै नौबत बाजै,

थारी किरपा सै होवै भोला भाल लायक ।।
खाटूवाला श्याम सकल सुख दायक ।।

मीठै मीठै चूरमै[2] रो भोग लगाऊँ,
रात दिवस बाबा थारा गुण गाऊँ,

---

१. मठ=मन्दिर २. चूरमै=आटा सेककर घी-शक्कर मिश्रित

ध्यावै परिवार थे कुल रा नायक ।।
खाटूवाला श्याम सकल सुख दायक ।।

मंगल काज करां म्हे थारै द्वारै,
जात जड़ूलो[2] गठ जोड़ो थारै स्हारै,

बिपता पड़ै तो बाबा थे ही बणो स्हायक ।।
खाटूवाला श्याम सकल सुख दायक ।।



---

२. जड़ूलो=मुंडन



राणीसती मां

राणी सती माँ ओम्हारी प्यारी सती माँ ।।
लाल चूनड़ सिणगारी[1] सती माँ ।।

माथै पै हिंगलू नाक मै बेसर[2],
हाथां मै राची मैंदी रंग केसर,

सीस नवै यो चरणां मैं सती माँ ।।
राणी सती माँ ओम्हारी प्यारी सती माँ ।।

तेरह टीकी सागै सथियो देवो,
मैन्दी चावल नारेल टेवो[3],

---

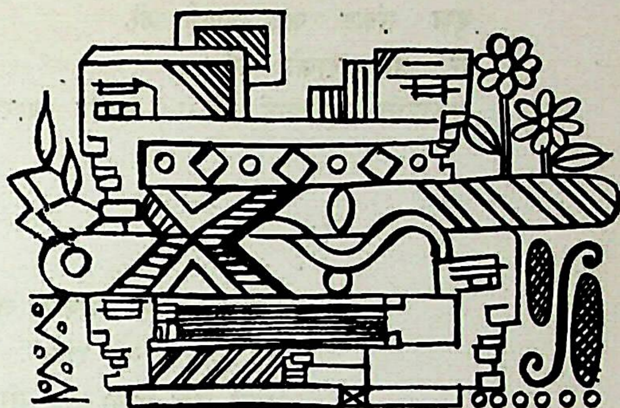
१. सिंणगारी=सर्व श्रृंगारपूरित २. बेसर=नथनी ३. टेवो=चढ़ावो

बिगड्या काम संवारै सती माँ ।।
राणीसती माँ ओ म्हारी प्यारी सती माँ ।।

पूरी आस करै माँ जन - जन की,
दरस मिटावै पीड़ा हर तन की,

रलमिल[४] ध्यावो सै ही दादी सती माँ ।।
राणी सती माँ ओम्हारी प्यारी सती माँ ।।

४ रलमिल=मिलजुल



पित्तर प्यारा

पित्तर[1] प्यारा भोत लागै म्हानै
कुल री राखे लाज,
जगावो जोत साई जी ।।

पैंडै[2] दीवो भल दिपै[3] देवा
सुगणा[4] होवै काज
घणी थारी सकलाई जी ।। पित्तर प्यारा....

---

१. पित्तर=पित्र २. पैंडै=पानी के पात्र रखने का स्थान ३. दिपै=प्रकाशित होवें
४. सुगणा=शुभ

दुख संकट जद आपड़ै जी,
थे ही राखो लाज,
सुकीरति म्हे पाई जी ।। पित्तर प्यारा....

अनधन बरसै मोकलो जी,
बैठ करां म्हे राज,
थारी कुल गाथा गाई जी ।। पित्तर प्यारा....

•

५. मोकलो=बाहुतायत से

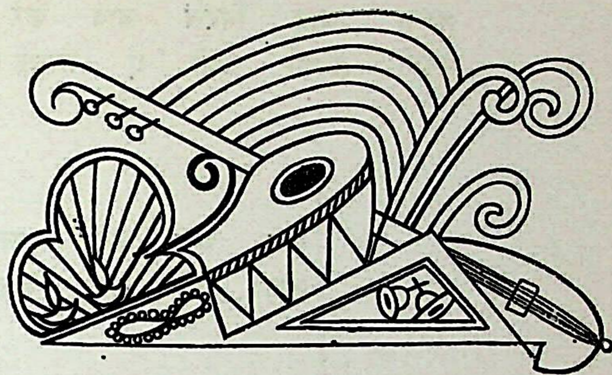
सगाई

तथा

भात

का

गीत



सगाई है सगाई

सगाई है सगाई बनै कै मन भाई।
नल बनी रुन झुन करती आई।।

सज ज बनड़ी चौकी पै बैठी।
सब मिल सतरंग चौक पुराई[1]।।

कंर की दादी लाड लड़ावै,
बाबो जी बनड़ी की गोद भराई।।

ताऊ ताई जी हार पहरावै तो
चाची चाचो जी तील पहराई।।

---

१. चौक पुराई=रंगोली सजाना

अम्मा बाबू निरख चाव करै
बनड़ी हरखी घणी ए लजाई ।।

भुवा भैण करै जुगल आरतो
जोड़ी नै जग भोत सराई[2] ।।

---

२. सराई=सराहना की



भात

भात भरण मेरो बीरो आयो
तो, आँगण मंगलचार,
बधाई मेरै बीर की ।।

बाबुल मुलकै[1] मोद सूं जी
तो, जामण[2] हुलसै[3] हेत ।। बधाई...
घणै ए चा सूं बेल बधाई
तो, मोती निपज्या खेत ।। बधाई...

सोवण दिवलो करूँ रे आरतो
बाँधू बदन वार ।
बधाई मेरै बीर की ।।

भावज लम्पो गोट सजाई
तो, मैनड़ मांड्यो जाल ।। बधाई...
रंगरेजण म्होरां सैं मोली
तो, चूनड़ ल्याई लाल ।। बधाई...

---

१. मुलकै=मुस्कराना २. जामण=माँ ३. हुलसै हेत=ममतामयी प्रसन्नता

चौक पुराऊँ[4] चूनड़ ओढ़ूं,
पहरूँ चन्दर हार,
धाई मेरै बीर की।।

चिरजीवो मेरा जाभण जाया[5]
भाभी रो अमर सुहाग।। बधाई...
दे आसीस मेरा चाचा ताऊ,
नगर सरावै भाग।। बधाई...

बनड़ै - बनो रो ब्याव रच्यो है
बांचो साखाचार[6],
बधाई मेरै बीर की।।

●

४. चोक पुराऊँ=रंगोली बनाना ५. जामण जाया=भाई ६. साखाचार=विवाह मंत्र



भात

आयो आयो माँ को जायो बीर
चूनड़ ल्यायो अनमोली ।।

भात भरै हरषावै तिलक कुमकुम रोली ।।
भावज लाड़ लड़ावै, बधाई बांटे गुड़भेली ।।

आयो आयो मां को जायो बीर
चूनड़ ल्यायो अनमोली ।।

गावै गावै मंगल गीत सकल[1] सखि री टोली ।।
हिवड़ै हेत जता सरस[2] मावड़ बोली ।।

आयो आयो मां को जायो बीर
चूनड़ ल्यायो अनमोली ।।

---

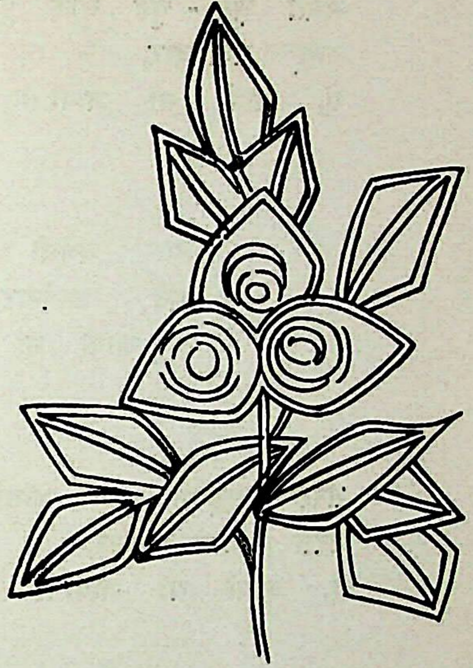
१. सकल=सभी २. सरस=मीठी

आंगण चोक पुराय बीरै नै बाँधू मोली ।।
धन-धन म्हारा भाग चूनड़ ओढ़ूं रतनाली[3] ।।

आयो आयो मां को जायो बीर
चूनड़ ल्यायो अनमोली ।।

---

३. रतनाली=नगीनोंवाली ।



भात

रतन जड़ाव रंगीली चूनड़,
भातभरण परवार,
ऐ, आयो मां जायो ।।

आंगण मंगल चार
ऐ, आयो मां जायो ।।

बाबुलरै मन चाव घणेरो
मावड़ हेत अपार,
ऐ, आयो मां जायो ।।

भावजां बूढ़ सुहागण होवै
बीरां री उमर हजार,
ऐ, आयो मां जायो ।।

मोती चुग - चुग चोक पुराऊँ,[1]
बांधू बन्दनवार,
ऐ, आयो मां जायो ।।

लाल बंधेजी चूनड़ ओढूँ,
गोटै लम्पैदार,
ऐ, आयो मां जायो ।।

सरस सुहाणी[2] गावो बधाई,
बरसै प्रेम फुहार,
ऐ, आयो मां जायो ।।

---

१. चोक पुराऊँ=रंगोली बनाऊँ २. सुहाणी=सुहावनी



भाई भाभी की ओर से भात

मोत्यां बिधली लाल,
बाई, थारै भात भरण म्हे आया जी ।।
नादीदो दिन आज,
बाई, थारी भावज लाड लडायाजी ।।

चोकपुरावो चोकी मेलो[1]
कुमकुम तिलक लगावोजी ।
नारेल मिसरी मेवो देवो
हिवड़ै हेत जतावो[2] जी ।

---

१. मेलो=रक्खो २. हेत जतावो=स्नेह करो

सगली नार सुमंगलि मिलकै
गीत बधावा गाया जी ।।
मोत्यां बिचली लाल,
बाई, थारै भात भरण म्हे आयाजी ।।

ओझरियो[3] बंधेज रंगा कै,
लम्पो जाल कढ़ायो जी ।
घणै चाव सै नेग भात को,
चूनड़ उढ़ा मनायो जी ।

भावज थारी अमर सुहागण,
चिरजीवै मां जाया जी ।।
मोत्यां बिचली लाल
बाई थारै भात भरण म्हे आयाजी ।।

❀

३. ओझरियो=रेशमी कपड़ा

पुत्र-विवाह

का

गीत



बन्नो

अम्बे गौरी सूं म्हे राजकुंवर मांग्यो।
बन्नो पहरंयां होवै लाल कसूंबी बागो।।[1]

पेचै[2] पै किलंगी सेवरो,
धोको[3] अम्बै रो देवरो,

जिवड़ै सूं प्यारो बनो हद लाग्यो।
अम्बे गौरी सूं म्हे राजकुंवर मांग्यो।।

बाजी नौबत अर भेर[4] जी,
परणावो कांई देर जी,

---

१. कसूंबी बागो=दुल्हे के पहनने का सिन्दूरी रंग का पांवों तक लम्बा वस्त्र २. पेचै=पगड़ी
३. धोको=पूजा करो ४. भेर=गजभर लम्बा तांबे का फूकसे बजनेंवाला भोंपू

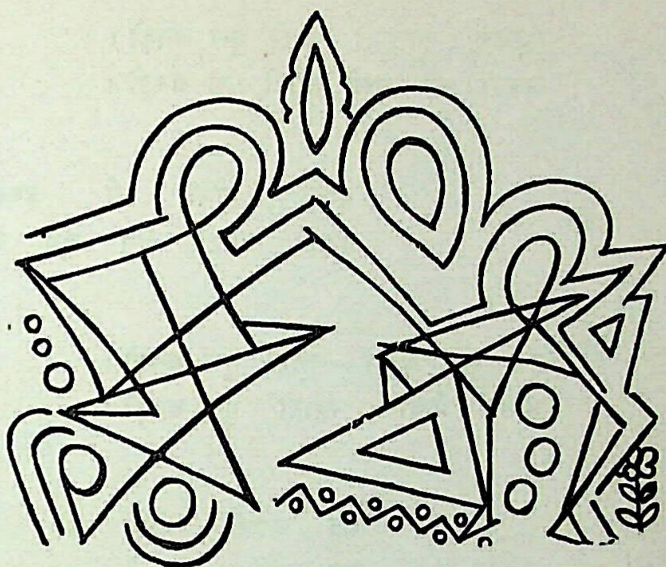
जुगजुग ताणी होवै संगसागो[५] ।
अम्बे गौरी सूं म्हे राजकुंवर –मांग्यो ।।

घूघरिया घमके घोड़ी रा
आवो जो बनड़ा जोड़ी रा,

म्हारे महल कंगूरां सुगणो बोल्यो कागो ।।
अम्बे गौरी सूं म्हे राजकुंवर मांग्यो ।।

●

५. संग सागो=साथ



गुल बनड़ो-गुल बनड़ी

केसर को तिलक म्हारो गुल बनड़ो
कुमकुम टीकी[1] म्हारी गुल बनड़ी ।।

दमकै झलकै दोन्यू निशदिन,
नहीं रह पावै इक दूजै बिन,

बायां[2] रो बाजूबन्द गुल बनड़ो ।
लूंबी लटकन म्हारी गुलबनड़ी ।।

आंख्यां आंख्यां मैं बतलावै,
हिवडो हरखै उमग्यो जावै,

---

१. टीकी=बिन्दिया   २. बायां=बाँहे

काजल रतनारो म्हारो गुल बनड़ो।
अधरां की लाली म्हारी गुल बनड़ी।

हाथां हाथां मैं हथलेवो[3]
बनड़ो बनडी जुग जुग जीवो,

हथ फूल बण्यो म्हारो गुल बनड़ो।
मांडी मैंन्दी म्हारी गुल बनड़ी ।।

गठ जोडो[4] होवै मन भावै,
इक दूजे मैं वै रम जावै,

पेचो बंधेजी म्हारो गुल बनड़ो
चूनड़ कसूंबी म्हारी गुल बनड़ी ।।

---

३. हथलेवो=वैवाहिक हाथ मिलाने की रस्म ४. गठजोड़ो=ग्रंथि बन्धन



परदेसी बनो

चम्पो चमेली मरुवो महकण[1] लाग्यो।
सूत्यो परदेसी बनो नींदां सूं जाग्यो॥

आयो हरियालो बनो बागां मैं आयो,
बनड़ी कै हिवडै मैं बदली सो छाग्यो॥[2] चम्पो...

घोड़ी नै बाँधी बनो नीम कै नीचै,
सरवर मैं न्हाबा[3] बनो उठतां ही भाग्यो॥ चम्पो...

बड़तां[4] ही आभा दीपी[5] निरमल जल मैं,
बनड़ो बनी रो झट हथलेवो मांग्यो॥ चम्पो...

आंख्या से आंख्या की होई सगाई,
हिवडै रो भाव हिये माही जाग्यो॥ चम्पो...

---

१. [1]महकण=महकने लगी २ छाग्यो=छा गयी ३. न्हाबा=नहाने के लिये
४. बड़तां=घुसते ही ५. दीपी=दिखाई पड़ी

हाथां से हाथ मिल्या पल भीतर
जनम - जनम रो होवैगो सागो[6] ।। चम्पो...

फूल चुग्या था बनी सोणां सोणां[7]
बनड़ो बनी नै बरमाला पहरागो ।। चम्पो...

फेरा लेवैगा दोन्यू गठजोड़ो करके
बनड़ो बनी री सुख मांग भरैगी ।। चम्पो...

जुग - जुग जीवो या पुन्दर जोड़ी,
सूवो मैना सूं बतलावण[8] लाग्यो ।। चम्पो...

---

६. सागो=साथ ७. सोणां सोणां=सुन्दर-सुन्दर ८. बतलावण=चर्चा



बन्ना आवो नां

बन्ना अंग - अंग उठी जी सुवास,
आवो ना म्हारैं पास,
सहेल्यां छेड़ै गोरी धण नै।।

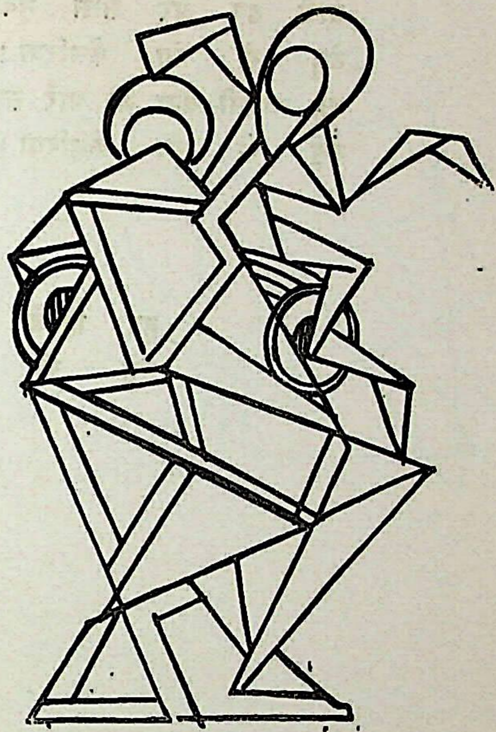
बना झिरमिर पड़ैं जी फुहार,
करो नां आख्यां चार,
निहारूँ थाने कण कण में।।

बना बागां में नाचै मोर
पपइयो करै शोर,
उड़ीकूं[1] उबी आंगण में।।

बना पणाघटियै जद जाऊँ,
घड़ो नी भर पाऊँ,
याद आवो जी थे पल-पल में।

बना तारां छाई है रात,
करां म्हे की सूं बात,
आवो जी ढोला बणठण[2] कै।।

१. उड़ीकूं=प्रतीक्षा करूँ २ बणठण कै=सजधज के



बन्ना बासन्ती बयार

बन्ना भीणी - भीणी बासन्ती बयार
टेसू रो रंग केसरिया।
आंगणियै में ढोलो¹ रंग धार
टेसू रो रंग केसरिया।।

बन्ना आयो आयो फागणियै रोमास
टेसू रो रंग केसरिया।।
नाचो सब मिल घूमर दे-दे ताल
टेसू रो रंग केसरिया।।

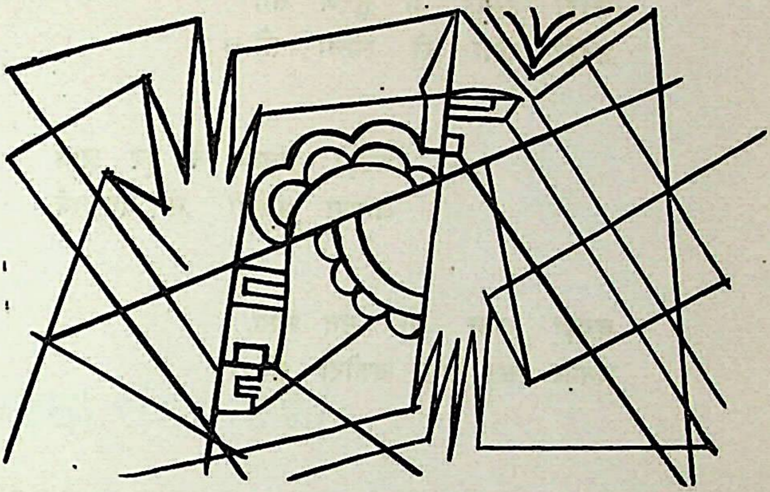
---

१. ढोलो—बहावो

बाजै ढप अर झांझ मृदंग
टेसू रो रंग केसरिया।
बहू आवैंगी बना जी थारै साथ
टेसू रो रंग केसरिया।

हर हिवडै में हरख[2] अपार।
टेसू रो रंग केसरिया।।

२. हरख=हर्ष



बनड़ो गुल फूल

बनड़ो गुलफूल गुलावै सों,
बनड़ी गुलफूल चमेली सी ।।

बनड़ो सिणगार[1] करै बनी रो
मोती मणी और कनक कणी रो,

बनड़ो गज मोती सो भायो,
बनड़ी भाई हीरक मणी सी ।।

बनड़ो बागां रो सूवटियो
बनड़ी री बोली कोयल-सी,

---

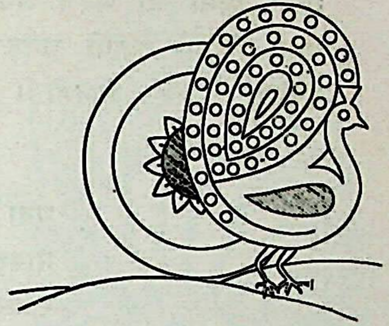
१. सिणगार=श्रृंगार

बनड़ो अम्बर[२] मैं सूरज सो,
बनड़ी उषा री लाली सी ।।

बनड़ो बनड़ी नै हद चावै
आंख्या आंख्या मैं बतलावै ।

बनड़ो चंदा सो मन भावै,
बनड़ी चित चोर चकोरी - सी ।।

२. अम्बर=आकाश



बन्ना रंगीचो चंग बाजणों

बन्ना आयो दिनमंगल आज रंगीलो चंग बाजणो
नाचो सब मिल घूमर दे-दे ताल रंगीलो चंग बाजणो ।।

बन्ना बाबा जी लुटावै मणी म्होर जी,
दादी गावै गुल बनड़ै रा गीत,
रंगीलो चंग बाजणो ।।

बन्ना ताऊ जी सजाई घोड़ी सोवणी,
ताई बांधी बांधी बंदनवार
रंगीलो चंग बाजणो ।।

बन्ना चाची जी आई काजल पाड़ कै,[१]
थारा चाचा जी सजाई है बरात,
रंगीलो चंग बाजणो ।।

१: पाड़ कै=बनाकर

नाना मामा जी भरण अया भात जी,
नानी मामी ल्यायी चूनड़ लाल,
रंगीलो चंग बाजणो ।।

भूवा बाई जी बनै को करै आरतो,
मावड़ पल्लो कर जतावै घणो हेत[2]
रंगीलो चंग बाजणो ।।

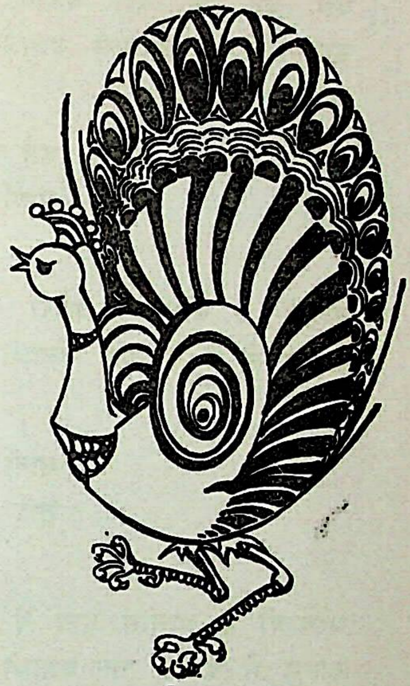
मैणां गूंथी गूंथी घोड़ी की बाग[3] जी,
जीजा सगला[4] थामी बैंकी[5] तो लगाम,
रंगीलो चंग बाजणो ।।

बन्ना चाल्या पेंचै उपर धर सेवरो,
पाछा[6] आज्यो जी बहू नै लेकै साथ,
रंगीलो चंग बाजणो ।।



---

२. घणो हेत=अधिक प्यार ३. बाग=घोड़ी के सिर के बाल ४. सगला=सभी
५. बैंकी=उसकी ६. पाछा=वापस



बन्ना जी खेलो फाग

•

फागण मैं दे-दे ताल बजाओ ढप झांझ।
बन्ना जी खेलो फाग रचाओ रंग आज।।

धूम धमाल मचावै बनो रंगसूं,
गावै- गावै गीत गमक आवै चंगसूं,

बन्ना कद होई भोर कदेसी[1] होई साँझ ।।
फागण मैं दे-दे ताल बजाओ ढप झांझ ।।

बन्नै को साथीड़ो एक गोरी बण आयोजी,
घाघरियै रो घेर घूमर घमकायो जी,

मूछालै[2] नै घूघट सूं घणेरी आवै लाज ।।
फागण मैं दे दे ताल बजाओ ढप झांझ ।।

नानी मामी बनै की नजरियां उतारै,
ताई चाची म्होर रुपइया वारै,

अम्माजी दे आसीस बना थे करो राज ।।
फागण मैं दे-दे ताल बजाओ ढप झांझ ।।

---

१. कदेसी=कब २. मूछालै=मूंछवाला



बन्ना केसर रंग फुहारा

केसर रंग फुहार,
बना झड़ लागी तोरण द्वार ।।
लागी तोरण द्वार,
बना जी आंगण मंगलचार ।।

रतन जड़ाऊ रंग पिचकारी ।
चपल सखी सब भर कै मारी ।

बहकी मंद बयार
बना जी गमकै[1] घर - संसार ।।
दादी सासू लाड़ लड़ावै ।
ताई चाची कै मन भावै ।

---

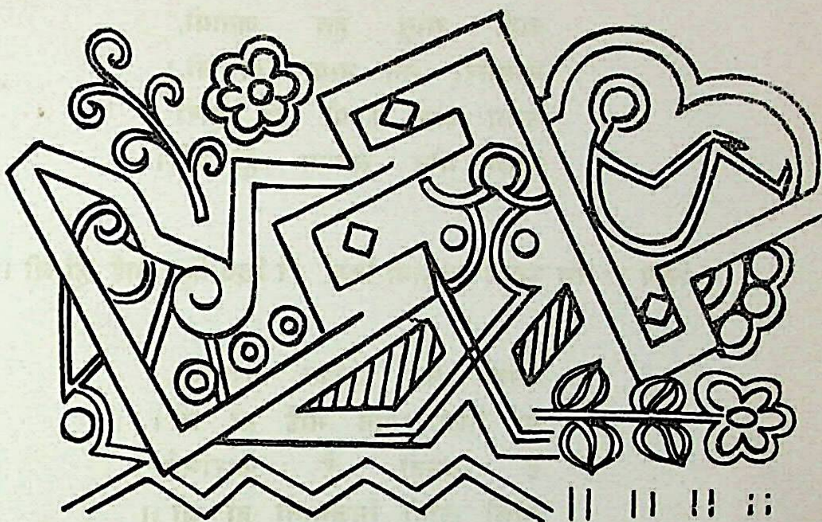
१. गमकै=सुगन्धित हो

सुन्दर, राज कुमार,
बना जी निरखे नर अर नार ।।

साला - साली रंग लगावै ।
मीठा तीता[2] बोल सुणावै ।

कुम कुम री रंग धार,
बना जी फागण को त्योहार ।

२. तीता=चुभते हुए



बनड़ा जी की मिजमानी

बनड़ा जी थे गया सासरै किसी होई मिजमानी[1] हाँ जी ।।
कुण थारा लाड़ लुड़ाया बना जी कुण दी थानै गाली हाँ जी ।।

भाँति भाँति का व्यंजन जीम्या,
सुसरो जी नगर सरायो हाँ जी ;
दादसरो[2] जी लाड़ लड़ायो,
सै दी मीठी गाली हाँ जी ।

कुण थारा चाव[3] कर्‌या दुलराया कुण थानै घणा सताया हाँ जी ।।

---

१. मिजमानी=सत्कार   २. दादसरो=दादाससुर   ३. चाव=मनुहार

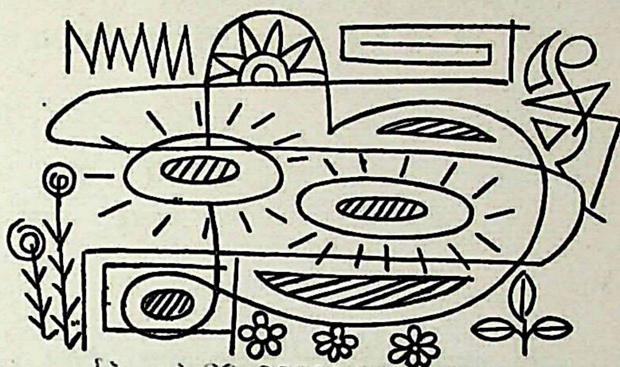
दादी सासू हेत[4] जतायो,
मामसरा[5] मन भाया हाँ जी।
साला चाव करयो हद म्हारो
साली भोत सताया हाँ जी।

किण रा नैण उठ्या सरमाया किण री छिब हिय भाई हाँ जी।

बनड़ी नैण उठ्या सरमाया,
या छिब म्हानै भाई हाँ जी।
ई बनड़ी रै कारणियै
गाली लागी मिजमानी हाँ जी।।

●

४. हेत=स्नेह ५. मामसरा=मामासमुर



पेचो

बनड़ा पेचै[1] रा पेच अमोल बंधेजी केसरिया ।।
बाई रा कंत[2] संवारै पेचैरा बंद मन हरिया ।।

पेचो रंग - रेजण रंग ल्याई जी,
देवो न्यौछावर मन भाई जी,

बनड़ा बांधो चौकी बैठ निकासी की बरियां[3] ।।
बनड़ा पेचै रा पेच अमोल बंधेजी केसरिया ।।

रच ल्यायी मालण सेवरियो,
रतनारो मोती नग जड़ियो,

---

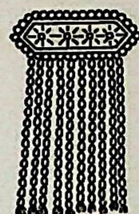
१. पेचै=पगड़ी   २. बाई रा कंत=जंवाई   ३. बरियां=समय

बनड़ा वारां म्हे सुवरण म्होर सेवरियै री लड़ियां ।।
बनड़ा पेचै रा पेच अमोल बंधेजी केसरिया ।।

पेचै उपर किलंगी सोवै,
मावड़ हरखै बाबुल जोवै,

म्हारै आंगण बाजै भेर[४०] कलस मंगल धरिया ।।
बनड़ा पेचै रा पेच अमोल बंधेजी केसरिया ।।

४०. भेर=मंगलवाद्य



सोवण सेवरो

चतर बनै को रंगीलो सोवण सेवरो[1]।
जैपर सैं जड़वा कै मंगायो सोवण सेवरो।।

लड़ी-लड़ी मैं मोती सोवै,
बिच - बिच सोवै लाल।
हीरा - पन्ना की जगमग सैं,
दम - दम दमकै भाल[2]।

पचरंगिये पेचै[3] उपर सजायो सोवण सेवरो।
चतर बनै को रंगीलो सोवण सेवरो।।

दादी दे आसीस बना,
बाबा रो हिवड़ो हरखै।
ताई बारै सोना - चांदी,
ताऊ बनै नै निरखै।

---

१. सोवण सेवरो=सुन्दर सेहरा   २. भाल=मस्तक   ३. पेचै=पगड़ी

नादीदो दिन आज दिखायो सोवण सेवरो।
चतर बनै को रंगीलो सोवण सेवरो।।

चाची जी सखियां कै सागै
मंगल गावै गीत।
चाचा जी मन मोदभर्या है
पूरी कर कै रीत।

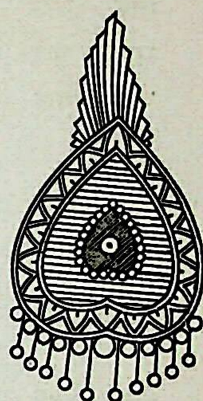
मालण कलियां गूंथ बणायो सोवण सेवरो।
चतर बनै को रंगीलो सोवण सेवरो।।

जीजो जी पगड़ी नै बाँधे
भैनड़[4] नजर उतारै।
भाभी काजल टीकी देवै,
भूवा मोती वारै।

आंगण में मंगल काज करायो सोवण सेवरो।
चतर बनै को रंगीलो सोवण सेवरो।।



४. भैनड़=बहिन



रंग बनै रो सेवरो

म्हारे रंग बनै रो सोवण सेवरो।
मालण आई आई ए, ल्याई फुलड़ाँ रो हार,
रल मिल[1] पोयो सोवण सेवरो ।।

ल्यायो चम्पा चमेली अर केवड़ो,
मालण ल्यायी ल्यायी ए गुल फूल गुलाब
रल मिल पोयो सोवण सेवरो ।। म्हारे०

सोने चांदी तारां सैं गूंथ्यो सेवरो,
मालण जड़िया जड़िया ए नवरतन हजार,
रल मिल पोयो सोवण सेवरो ।।

दादी बाबो जी हिवड़ै हरख करयो,
मालण देवै देवै ए तनै भर भर थाल,
रल मिल पोयो सोवण सेवरो ।।

---

१. रल मिल=सहयोग सें

ताई ताऊ जी लाड़ लड़ाइयो
मालण वारां वारां ए तेरै सेवरै पै म्होर[2]
रल मिल पोयो सोवण सेवरो ।।

चाचा चाची जी मोदमनाइयो
मालण गावै गावै ए रंग बनड़ै रा गीत
रल मिल पोयो सोवण सेवरो ।।

भुवा बाई भैनड़ सुख मानियो
मालण देवै देवै ए तनै लाडूड़ा री पोट,[3]
रल मिल पोयो सोवण सेवरो ।।

मावड़ बाबू जी उव्या[4] द्वार पै
मालण निरखै निरखै ए सोवण सेवरै री लूंब
रल मिल पोयो सोवण सेवरो ।।

बनड़ो सेवरो सजा कै बहू ल्यावैगो,
मालण बहू आवै ए तेरै सेवरियै रैं पाण,[5]
रल मिल पोयो सोवण सेवरो ।।



२. म्होर=सोने के सिक्के ३. पोट=गठड़ी ४. उव्या=खड़े ५. पाण=क़ारण



बीन्द कै घोड़ी चढ़नै पर

घोड़ी आई ए सहेल्यो छम छम करती
घोड़ी आई ए ।।

मोत्यां की रंग झूल विराजै,
सोनै का सब गहणा साजै,
किलंगी तुर्रे दार सजी,
घोड़ी आई ए ।। आई ए - घोड़ी आई ए · · · ·

लाल मंणी को कंठो गल[1] मैं।
चांदी की पायलड़ी पग[2] मैं।
मखमल गादी[3] पीठ धरी।
घोड़ी आई ए ।। आई ए - घोड़ी आई ए०....

नाच नाच कै सुगन मनावे
दादी बाबो जी रैं मन भावै।
दरवाजै पर धूम मची
घोड़ी आई ए ।। आई ए-घोड़ी आई ए....

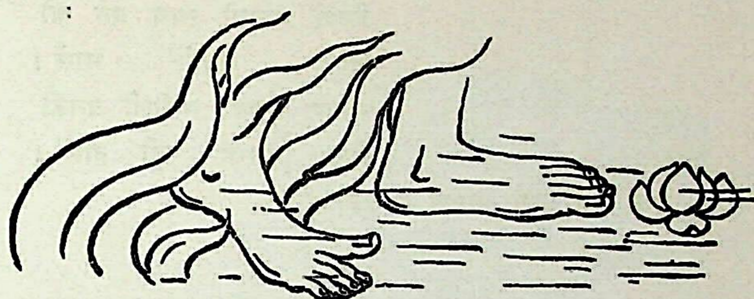
घोड़ो पकड़ी लाड़ जंवाई।
भैनड़ भूवा बाग गुंथाई।
नेग देवो आनैं मन चाही
घोड़ी आई ए ।। आए ए-घोड़ी आई ए...

छतर[4] सजावो कलसो मेलो[5]।
नूण[6] राई छोटी बाई करल्यो।
मावड़ हेंत उमड़ आयो,
घोड़ी आई ए। आई ए - घोड़ी आई ए...

●

---

१. गल=गला २. पग=पैर ३. गादी=गद्दी ४. छत्तर=छाता
५. मेलो=रक्खो ६. नूण=नमक



घोड़ो हिवड़ै भाई

बना जी थारी घोड़ी हिवड़ै भाई ।।

नाचै ठुमकै बाजै घूघरा
सुगन मनावै आज
रंग बनो कस जीन सवारी
चाल्यो मंगल काज ।।

सहेल्यां म्हारी गाई आज बधाई ।।

बेला जूही चमेली चम्पा
बिच बिच लाल गुलाब ।
घोड़ी उपर झालर सोवैं
ज्यूं मोती पै आब[1] ।।

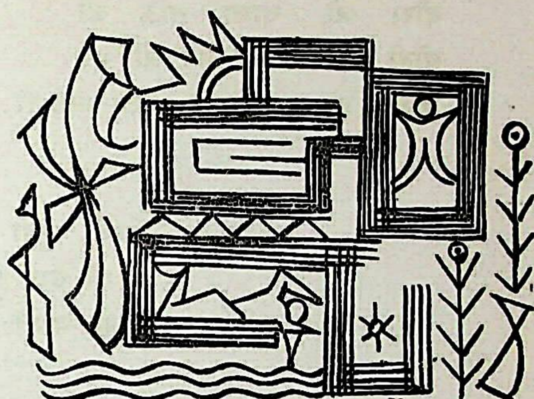
घोड़ी नैं बना रंगरंगीली बणाई ।।

---

१. आब=चमक

लियाँ बराती साथ बनै की
घोड़ी मदरी[2] चालै।
सोवण सुघड़ सजीली बनड़ी
बिदा करयाँ नही हालै[3]।
बना जी बाजे आंगण में शहनाई ।।

२. मदरी=धीरे ३. हालै=टस से मस



घोड़ी

रंग बनड़ै री घोड़ी आई
पैंजणी छमकावती ।।

घोड़ी तो आई छलबली
बा तो नाचै कूदै हिनहिनावै
सुगण देवै मनरली[1] ।। रंग बनड़ै री...

फूलां की झालर सोवणी,
बैं कै मोतियां को साज चिलकै,
बाग[2] रेशम धारणी ।। रंग बनड़ै री...

बाबा जो ल्याया घोड़ी नै
बा तो लाड़लैं को मन रिझायो
घूघरा[3] छमकावती ।। रंग बनड़ै री...

---

१. मनरली=सुन्दर २. बाग=लगाम ३. घूघरा=घूंघरू

बीरा जी, चाचा ताऊ जी
घोड़ी को निरख्यो रूप जी भर
हिवड़ो हद हुलसावणी ।। रंग बनड़ै री...

भैनड़ गूंथी बाग नै
थे तो चाव सै द्यो नेग[4] सुगणा
जीजो थामी[5] लगाम जी ।। रंग बनड़ै री..

छोटी बाई उतारै नजर जी
थे तो कस कमर घोड़ी पै चढ़ ज्यो
माँ उतारी आरती ।। रंग बनड़ै री...

घोड़ी तो चाली मटकती
डोली ले बनड़ा पाछा[6] आज्यो
बाजै रुनझुन पैंजणी ।। रंग बनड़ै की...



४. नेग=भेंट ५. थामी=पकड़ी ६. पाछा=वापस



बनै की घोड़ी

बनै की घोड़ी तोरण[1] पै अड़ी,
बजावै घूघरा वा खड़ी ए खड़ी ।।

सोवण रंगरी बनै को पगड़ी,
हरख निरखै बनै नै बनड़ी ।।

सेवरै[2] सोवै मोती वाली लडी,
बनी भी पहरी हीरै की बंगड़ी[3] ।।

---

१. तोरण=स्वागतद्वार २. सेवरै=सेहरा ३. बंगड़ी=चूड़ियाँ

बनै की बनी सै नजरिया लड़ी,
कमर सोवै सोनै की तगड़ी ।।

बनी सुणावै बनै नै जकड़ी[४],
हाथां मैं सोवै जडाऊ मुंदड़ी ।।

पहरावै माला माथै पै चुंदड़ी
फुलां की सेंजां बिराजै जोड़ी ।।

●

४. जकड़ी=प्रणयगीत



बहू महलाँ में आई ओ (बधाओ)

आई आई ओ,
बहू महलाँ में आई ओ,
सिणगारी कुल जोत बहू सासूनै भाई ओ ।।

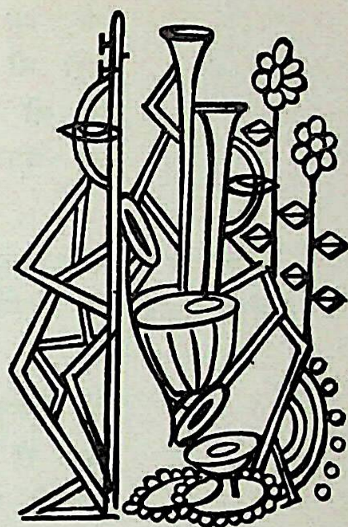
घुंघिटियो सरमावै बंगड़ी बहकी बहकी जावै ।
कुंडल करै किलोल तो बेसर अधरां में भरमावे,
बोरफीणी बतलाई ओ,
मांग सिंदूरी राजिन कै कर सूं करवाई ओ ।।
बहू महलाँ में आई ओ ।।

गलपटियो गम्भीर टेवटो[1] हिवड़े पै झूलै
बाजूबंद बायां पै आकै सुध बुध सब भूलै
खणक[2] चुड़लो समझाई ओ
मैंदी रंग सुरंग माडणां रूप रचाई ओ
बहू महलां में आई ओ ।।

तंग तागड़ो कोमल कटि पै लुल-लुल[3] हेत जतावै,
दावण सरक-सरक कै पायल बिछिया रास रचावै
रूणक झुण भोत सुहाई ओ
हलवां-हलवां[4] चाल बहू म्हारी जोत सवाई ओ
बहू महलाँ में आई ओ ।

---

१. टेवटो = गले में पहनने का भारी लाकेट २. खणक = खनक
३. लुल-लुल = झुक करके ४. हलवां-हलवां = धीरे-धीरे



नई बहू के आगमन पर

मंगल बाजै आज बधाई, जोत सवाई[1] कुल री ओ राज।
जोत सवाई संग सहेल्यो कुल बहू म्हारै आई ओ राज।।

करे आरती सुगणी सासू
नणदल नजर उतारै ओ राज।
बड़ी जिठाणी चोकी ढालै
गिरतो पल्लो टेवै[2] ओ राज।

मंगल द्वार पै झालर बांधो, मोती म्होरे लुटाई ओ राज।
जोत सवाई संग सहेल्यो कुल बहू म्हारै आई ओ राज।

१. जोत सवाई=कीर्ति और बढ़ी २. टेवै=सम्हाल कर रखे

लाड बहू नै पग पकड़ाई,
सुसरो जी भर देवै ओ राज।
जेठ जी देवै भेंट बहू नै,
देवर घूंघट निरखै ओ राज।

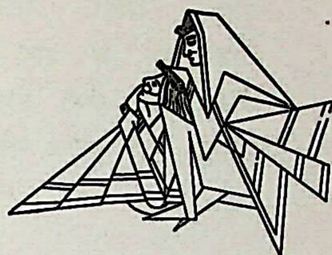
कलसै पर कलसो धर मेल्यो[3] मंगल कलस भराई ओ राज ।
जोत सवाई संग सहेल्यो कुल बहू म्हारै आई ओ राज ।।

गुल फुलड़ांरी सेज सजा कै
बनड़ी रो मुख निरखै ओ राज।
पायलड़ी री रुणझुण सुण कै
तन मन धन बनो वारै ओ राज।

बाबो जी आसीसां देवै बहू कुल बंस बधाई[4] ओ राज ।।

---

३. धर मेल्यो=रखा गया ४. बंस बधाई=वंश-वृद्धि



बहू की सिर गूथी कै समय

भाभी रो अमर सुहाग, ननद बाई मंगल गावै।
म्हारै दिवलै री जोत, सुहागण लाड़ लड़ावै ।।

कांगसियै[1] से केस सजावां
रस सिंदूरी मांग भरावां
माथै टीकी[2] काजल नयनां
होठा राचै पान, सुहागण रूप लुभावै ।। भाभी रो...

सिर पर फीणी 'बोर'[3] लगावो
नथ बेसर को रास रचावो
काना में कुंडल[4] री आभा
गलपटियो[5] गल बीच, सुहागण दिपै दिपावै ।। भाभी रो...

बाजू बन्द बायां[6] में सोवै,
चुड़लो हाथा में हुलसावै।
पायलड़ी पैरां में मुलकै,
बिछियां देवै ताल, सुहागण हद[7] शरमावै ।। भाभी रो...

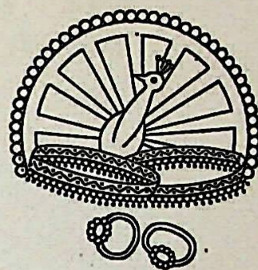
---

१. कांगसियो=कंघी २. टीकी=बिन्दी ३. फीणी बोर=मांगटीका जैसे गहने
४. कुंडल=बुन्दे ५. गलपटियो=गले में गुलबन्द ६. बायां=बाहें ७. हद=बहुत ही

चूनड़ ओढ़ो बेल[8] बधावो,
लाड बहू थे सब सुख पावो
मान बढ़ा ज्यो दोनू कुल रो
करज्यो सुगणा काज, सुहागण मोद मनावै ।। भाभी रो...

दादसरो[9] जी गोद भराई
दादी - सासू आसीस देई
ताई चाची हिव में हुलसैं
पूत[10] परणियो आज, सुहागण पगल्या[11] दावै ।। भाभी रो

८. बेल=वंश ९. दादसरो=दादाससुर १०. पूत=पुत्र ११. पगल्या=पं...
...सुतर



भाभी रो रूप

भाभी थारै चुडलै पै वारी जाऊँ
बनी थारी बिंदिया हरख सराऊँ।

घुंघटो लाल चूनड़ रो थारो
मांग सिन्दूरी मैंमद धार्यो।
नथ शरमावै अधरां नै छू कै,
काजलियो पलकां पै सार्यो[1]।।

भाभी थारै झुमखाँ पै लुट जाऊँ,
बनी थारी बिंदिया हरख सराऊँ।

गलपटियो गल बीच सुहावै,
हार हमेल हियै पै छावै।
टेवटियो आंगी पै टैयो,
सात लड़ी लड़ उलझी जावै।

---

१. सार्यो=लगाया

भावज फुल-गजरो केस सजाऊँ।
बनी थारी बिंदिया हरख सराऊँ।

बाजू बन्द बायां पै सोवै,
लूंबी लूम - झूम मन मोवै[2]।
हाथा मैं हाथ फूल खिल्या है,
चुड़लो रंग हिंगलू हद जोवै।

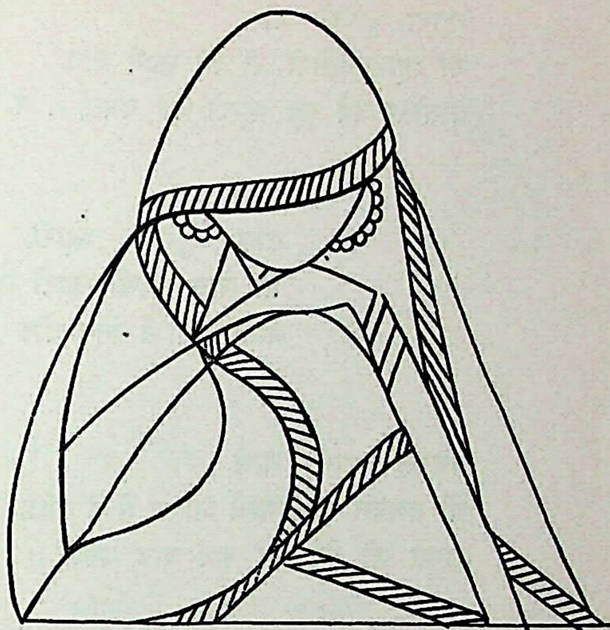
हथेल्यां मैन्दी रंग रचाऊँ।
बनी थारी बिंदिया हरख सराऊँ।

बिछिया रुनक - झुनक कै बाजै,
पायलड़ी रुक - रुक कै गाजै।
थाम कलेजो बाट निहारै,
बीरो निरखै भाभी लाजै।

बाबुल कुल कीरत रा गुण गाऊँ
बनी थारी बिंदिया हरख सराऊँ।

---

२. मन मोवै=मन मोहे



नई बहू रा भाव

मैं तो आई आई
जी मैं तो आई आई राजिन थारी लैर[1],
बाबुल म्हानै थारै सागै परणाई ।।

म्हेतो छोड़यो छोड़यो,
जी म्हेतो छोड़यो छोड़यो बाबा जी रो देस,
दादसरां जी री ड्योढ़ी[2] म्हानै हद भाई ।। मैं तो०

१. लैर=पीछे २. ड्योढ़ी=हवेली

म्हारा सुसरो जी
जी म्हारा सुसरो जी देवै म्हानै मान,
आसीसां देवै बहू म्हारो बंस बधाई ।। मैं तो...

सासू सुगणी म्हारी,
जी सासू सुगणी म्हारी सुगण मनावै,
मोती मूंगा सै मंगल चोक पुराई ।। मैं तो..

नणदल नाचै नाचै,
जी नणदल नाचै नाचै आंगण दे दे ताल,
दादस जी देवै भर भर बाड रुकाई ।। मैं तो....

देवर म्हारो धणा,
जी देवर म्हारो धणा लाड़ लड़ावै,
वो ओलै - छानै[3] भंवर सूं बात कराई ।। मैं तो..



३. ओलै-छानै = लुका-छिपा के



गावो बधावो

गावो बधावो सब मिल गावो।
आंगण मंगलचार रचावो॥

नौबत और शहनाई बाजै,
सुगण[1] भला नित म्हारै साजै[2]।
बनड़ी ब्यावां बनड़ो ब्यावां,
लाड - जंवाई बहू हद लाजै॥

द्वार पै कदली[3] थंब सजावो।
गावो बधाई सब मिल गावो॥

थापो[4] सथिया[5] सुघड़ बणास्यां
आंगणियै कुल दीप जगास्यां।
किलकारी किलकै पालणियै
जात जडूलो देव धुकास्यां।

---

१. सुगण=शकुन २. साजै=शोभायमान ३. कदली=केला
४. थापो=मांगलिक मांडने ५. सथिया=स्वस्तिक

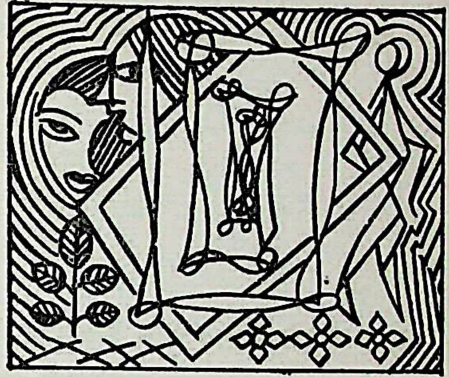
झालर बांधो कलस धरावो।
गावो बधावो सब मिल गावो।।

फूल गुलाबै सो महकै जंवाई,
बाई बनैरी जोड़ी भाई।
बहूरानी मुलकै मोती बरसै,
पूत परणयां[6] शुभ घड़ी आई।

छूछक[7] होवै अर मुकलाओ[8]।।
गावो बधावो सब मिल गावो।।

---

६. पूत परणयां=पुत्र-विवाह
७. छूछक=पुत्री के प्रथम संतान उत्पत्ति पर नेगचार
८. मुकलाओ=गौना



(बधावो) थारो प्रीत सैं भी गहरो

थारी प्रीति सैं भी गहरो-गहरो राचै म्हारै पान ।
म्हारे सुसरो जी री आन सासू देवै म्हानै मान ।।

नखरालै अधरां रै उपर झूलै भोली बेसर,
राच्यो इसो रंग ज्यूं ढोली[1] होवै गैरी केसर,

उंची जेठ जी री शान राखै घूंघटियै री कान ।
थारी प्रीत से भी गहरो-गहरो राचै म्हारै पान ।।

मधुरा बोल सुणाय अधर तो सरमावै,
नथ सूं लूम-झूम करके वै सकुचावै,

१. ढोली=डालना

खोटी[2] देवरियै री बांण[3] निरखै तीखै नैणां तान ।
थारी प्रीत सैं भी गहरो - गहरो राचै म्हारै पान ।।

होठ फड़ूकैं[4] मिलै हेत पिव सूं म्हानें ।
अधर - अधर सूं मिलै बात वै जद मानें ।।

पायो सिंदूरी म्हे दान भूली प्रियतम रे संग भान ।
थारी प्रीत सैं भी गहरो-गहरो राचै म्हारै पान ।।

---

२. खोटी=बुरी ३. बांण=आदत ४. फड़ूकैं=फड़कना



सुहागरात रो गीत

सांवली राता मैं उग्यो चांद गगन मैं।
बनड़ो संवारै बनी मांग भुवन[1] मैं।

रूपालो रूप बनी रो दमकै।
चंदा रै साथ सितारा चमकै।

बनड़ो बनी नै जोवै[2] लाल रतन मैं।
सांवली राता मैं उग्यो चांद गगन मैं।

पायल बाजै बनी चुड़लो खनकै।
चन्द्रमुखी रो घूंघटो सरकै।

---

१. भुवन=घर   २. जोवै=देखै

बनड़ो बितावै सारी रात कुंजन[3] में।
सांवली राता में उग्यो चांद गगन में।

बायरियै[4] सूं बदली हरखै
बनड़ो बनड़ी नै नित परखै

जोड़ी बिराजै इक दूजै रे मन में।
सांवली राता में उग्यो चाँद गगन में।

---

३. कुंजन=बाग ४. बायरियै=ठंढी हवा

पुत्री विवाह

का

गीत

ज्ञानी सिंह

का

[illegible]



बनी सूरज मुखी रो फूल

बनी सूरज मुखी रो फूल
सूरज बनो देख खिलै ।।

केसर बरणी चम्पा नयनी
उदी घटा[1] सा केस ।
गालां छाई उषा आभा
पचरंग थारा वेस[2] ।

बनी इंद्रधनुस को रूप
अम्बर बनो जाय मिलै ।
बनी सूरज मुखी रो फूल
सूरज बनो देख खिलै ।

कुंडल चिलकै चुड़लो खनकै
पायल रुन - झुन नाचै ।
बिछिया बाजै बिंदिया मुलकै
हँसली खिलखिल हांसै ।

---

१. उदी घटा=घने बादल २. वेस=वस्त्र

बनी चिलक चमकती बीज[3]
बादल बनो गलै सूं मिलै।

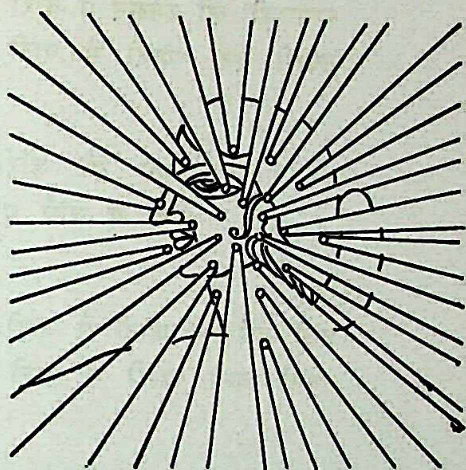
बनी सूरज मुखी रो फूल
सूरज बनो देख खिलै।।

बनड़ो आयो सब मन भायो
बनड़ी मुलकै और निहारै।
मंगल गावो आज बधाई
तन - मन - धन सब वारै।

बनी महकी मंद बयार[4]
गुलाबी बनो झूम हिलै।
बनी सूरज मुखी रो फूल
सूरज बनो देख खिलै।

---

३. बीज=बिजली ४ बयार=ठंढी हवा



नवेली बनी

नवेली बनी प्यारी मैं वारी जाऊँसा।
मैं वारी जाऊँसा, बलिहारी जाऊँसा।।

घाघरियो घमकै, घाघरियो घमकै,
पछेलीबन्द खनकै, घाघरियो घमकै,

रूपाली[1] लाली चूनड़ पै वारी जाऊँसा।
नवेली बनी प्यारी मैं वारी जाऊँसा।।

हाथां में मैंदी राचै, हाथां में मैंदी राचै,
सहेल्यां घूमर नाचै, हाथां में मैंदी राचै,

---

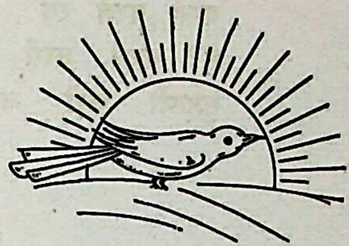
१. रूपाली=चांदी के कामवाली सुन्दर

पायलड़ी[2] की रुनझुन पै वारी जाऊँसा।
नवेली बनी प्यारी मैं वारी जाऊँसा।।

रेशम की डोरी, रेशम की डोरी,
नैणां सूं बांधै गोरी, रेशम की डोरी,

बनी बन्नै की जोड़ी पै वारी जाऊँसा।
नवेली बनी प्यारी मैं वारी जाऊँसा।।

२. पायलड़ी=पायल



बन्नी

काली कोयल शोर मचावै,
काली कोयल शोर मचावै,
बन्नी बन्नै कै मन भावै,

बागां बागां फूल्या,
ए ! बागां बागां फूल्या, बेला कचनार
सुहाणी घड़ी आई सखीरी ।।

झूलो लाल गुलाब सजायो,
झूलो लाल गुलाब सजायो,
सुवरण पाटी बठा झुलायो,

बरसै बरसै रंग
ए ! बरसै बरसै रंग, प्रेम फुहार।
सुहाणी घड़ी आई सखीरी ।।

सरवर[1] पाणी[2] भरबा जावै,
सरवर पाणी भरबा जावै,
बन्नी बन्नै सूं बतलावै,[3]

भूली सांझपड्यां तक।
ए ! भूली सांझ पड्यां तक आणो[4] घरबार।
सुहाणी घड़ी आई सखीरी।

१. सरवर=तालाब २. पाणी=पानी ३. बतलावै=वात करे
४. आणो=आना



बन्नो

बनी ए थारा बिछिया रुनझुन बोलै।
रुनक झुन ,सुन दादी जी डोलै।।

बनी ए थारी पायल शोर मचावै।
बनी की नानी मंगल गावै।

बनी को काजलियो रतनारो[1]
सहेल्यो म्होर असरफी वारो।

बनी को मैन्दी रंग रचाई
भूवा बाई कै हिवडै भाई।।

---

१. रतनारो=आकर्षक

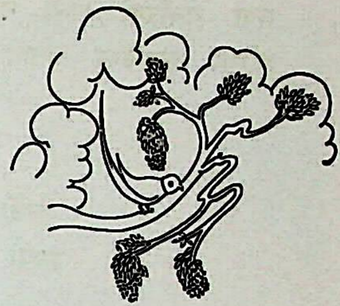
बनी को चुड़लो खन-खन खनकै।
खनक सुण कै बाबो जी मुलकै।।

बनी को बिंदिया रूप सजायो।
ताई - ताऊ जी कै मन भायो।।

मूंदड़ी[२] आँगलिया मैं सोवै
हरख मावड़ बाबू कै होवै।

●

२. मूंदड़ी=अंगूठी



बन्नो

हरिया सूवटिया बतादे बनो कद[1] आसी।
तेरी सोने चंच मढाद्यू बन्नो कद आसी।

बनड़ो आवै तो सूवटिया मोती म्होरै लुटाऊँ रे,
रंग मांडणा[2] भला मांड के बन्दनवार बंधाऊँ रे,

सूवा घोड़ी पै चढ़योडो बनो कद आसी।
हरिया सूवटिया बतादे बनो कद आसी।

बनडो आवै तो सूवटिया दिवलो थाल सजाल्यूं रे,
फूल गुलाबी गूंथ-गूंथ कै, मंगल माल बणाल्यूं रे,

---

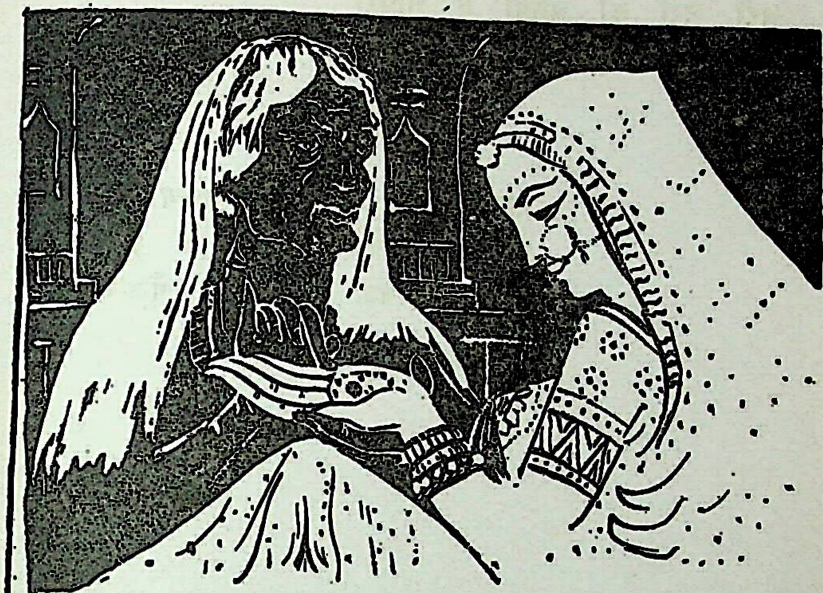
१. कद=कब २. रंग मांडणा=रंगोली

सूवा सेवरियो सजा कै बनो कद आसी।
हरिया सूवटिया बतादे बनो कद आसी।

बनडो आवै तो सूवटिया दुल्हनिया बण जाऊँ रे,
हाथां मैंदी माथां मैमद, चूनड़ रंग रचाऊँ रे,

सूवा फेरा लेवण प्यारो बन्नो कद आसी।
हरिया सूवटिया बतादे बनो कद आसी।।





बन्नो

बाजै पैजणिया ए बाजै पैजणिया
ऐ बन्नी धीरे-धीरे चाल ये है सैर[1] गलियां ।।

काहे की तेरी बणी ऐ नथणियां,
काहे की बणी लटकणियां ।। बाजै....

सोने की मेरी बणी ऐ नथणियां
मोती की है लटकणियां ।। बाजै....

काहे को तेरो बण्यो ऐ घाघरो
काहे को बणी चूनड़ियां ।। बाजै....

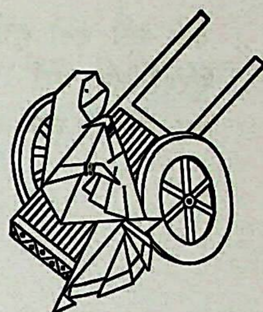
१. सैर=शहर

अरी जरी को बण्यो ऐ घाघरो
लहर बंधेजी चूनड़ियां।। बाजै....

पहर ओढ़ बन्नी नाचण लागी
घणी[2] सराई जग दुनियां।।
बाजै पैंजणियां ए बाजै पैंजणियां।।

---

२. घणी=बहुत



बन्नो

बनी आई, बनी आई, बनै कै मनभाई
हिवड़ो हुलसाई[1]
सखियां सब मंगल गाई ।।

बनी गोरी, बनी गोरी बनै नै बांध्यो डोरी
होठा मै मुस्काई,
या जोड़ी सब मनभाई ।।

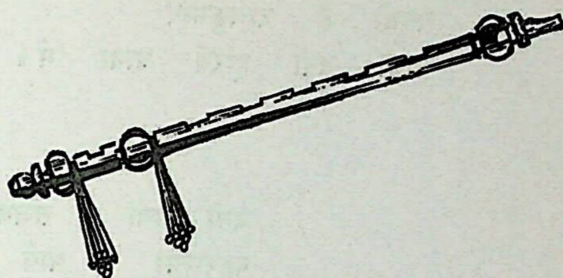
---

१. हिवड़ो हुलसाई = मन में प्रसन्नता हुई

बनी झूलै बनी झूलै बागां मैं हीन्डो[2] झूलै
सुरंगी रुत आई
रंग राची[3] धूम मचाई ।।

बनी भोली, बनी भोली बनै सै यूं बोली
करावो जी बिदाई,
थारी याद घणी म्हानै आई ।।

२. हीन्डो=झूला   ३. रंगराची=रंगभरी



बन्नी आवो नां

बनी आवो नां हरियै बागां मैं
थारी भोत करां मनवार[1]
आवो बनी हरियै बागां मैं॥

बनी बागां मैं निपज्या[2] फल घणा
पाक्या आम्बा[3] - अनार
आवो बनी हरियै बागां मैं।

बनी बागां मैं हीन्डो घालस्यां
झुलावै थानै सुगणी नार
आवो बनी हरियै बागां मैं॥

---

१. मनवार=खातिरदारी २. निपज्या=उपजै ३. आम्बा=आम

बनी बागां मैं बोल्यो सूवटो
बनडो है राजकुमार
आवो बनी हरियै बागां मैं।

बनी बागां मैं सजधज आवज्यो[४]
पहरास्यां थानै चंदरहार
आवो बनी हरियै बागां मैं।

४. आवज्यो=आना



बन्नी कै मन भावै

बनी कै मन भावै नाचै मन मोर।
सहेल्यां सागै गावै लागै गणगोर।

इन्द्रधनुष रंग मोर पांखड़ी[1]
तीखी चंचल - चपल आंखड़ी।

---

१. मोर पांखड़ी=मोरपंख

बनी बनै नै बांध्यो प्रीत री डोर
बनी कै मन भावै नाचै मन मोर ।।

नीम की डाल पै झूलो झूलै ।
भोली बनड़ी सुध बुध भूलै ।

बना जी आवो नां होतां[2] नई भोर ।
बनी कै मन भावै नाचै मन मोर ।।

गोटो सोवै लाल चूंदड़ी ।
बनडै को नग जड़्यो मूंदड़ी ।

जड़ाऊ रतनारो बनी कै सिर बोर
बनी कै मन भावै नाचै मन मोर ।।

---

२. होतां=होते ही



वरमाला

लाल गुलाब जड़्या मणी माणिक
वरमाला हिय हरख करावै ।
नार सुमंगली हलवा - हलवा[1]
बनड़ी नै ले बर तक आवै ।। लाल गुलाब...

माथै फीणी काना कुंडल
नग बेसर सकुचा शरमावै
गलपटियो गलबीच बिराजै
टेवटियो आंगी नै चावै[2] ।। लाल गुलाब...

---

१. हलवा-हलवा = धीरे-धीरे   २. चावै = चाहे

मैंदी राचै मुदड़ी मुलकै
करमैं वरमाला भरमावै ।
द्वारचार पै सरस सुहागण
मीठा - मीठा गीत सुणावै ।। लाल गुलाब...

आँख्या सै हिवडै तक जाकै
वरमाला दोन्यू पहरावै ।
जुगजीवो बाई री जोड़ी
अमर सुहागरा आसीस पावै ।।



कामणियां

बना तोरण द्वार सजायो जी गावै कामणियां।
मोतियां को चोक पूरयो,
मखमली मारग सजोयो।
मोगरे का फूल बांध्या,
मन में सबकै चाव[1] होयो।।

बना हस्ती[2] थे चढ़ आवो जी गावै कामणियां।
आरतै को थाल ले
सासू जी उब्या द्वार पै।
थारै आवण की खबर द्यो
द्वार तोरण मार कै।

---

१. चाव = उत्साह २. हस्ती = हाथी

बना घुड़ला थे चढ़ आवो जी गावै कामणियां ।

सब बराती रंग रंगीला
बींद[3] बिन्दायक[4] सजीला
झूमता आया सगाजी
बनै का बाबा हठीला

बना थारो रूप सरायो जी गावै कामणियां ।।

---

३. बींद = दुल्हा ४. बिन्दायक = सहवाला या गणेशजी



कामण

कामण[1] करस्यां राज बनै पर
कामण करस्यां राज ।।
कामण करस्यां चतर बनै पर
कामण करस्यां राज ।।

ऐसा कामण करां बनै पर
बनी कै हुकमा[2] चालै ।
लाड़ बनी का करै बनो,
बनड़ी बोलै जद हालै ।

१. कामण = जादू २. हुकमा = आज्ञा

जादू करस्यां लाड बनै पर
कामण करस्यां राज।
कामण करस्यां चतर बनै पर
कामण करस्यां राज।

बनड़ा जावो देस विदेसा,
बनड़ी नै ले ज्या ज्यो जी।
जद ज्यावो थे सैर सिनेमा,
एकलड़ा[3] मत ज्या ज्यो जी।

हिव रस ज्यास्यां लाड़ बनै पर
कामण करस्यां राज।।
कामण करस्यां चतर बनै पर
कामण करस्यां राज।

धरम करम का कारज बनड़ा
पूछ ताछ कै करियो जी।
रूपाली[4] कामणियां से बना
दूर दूर ही रहियो जी।

बनी को धारै ध्यान बनै पर
कामण करस्यां राज
कामण करस्यां राज बनै पर, कामण करस्यां राज।।

●

---

३. एकलड़ा=अकेले ४. रूपाली=सुन्दरी



द्वारचार गीत बनड़ो आयो ए!

बनड़ो आयो ए सहल्यो
गावो मंगल गीत द्वार पै
बनड़ो आयो ए।

चोक पुरावो ए सहेल्यो
चंदन चोकी मेल, द्वार पै
बनड़ो आयो ए।

तोरण मारो जी बना जी
हरिये नीम की डाल, द्वार पै
बनड़ो आयो ए।

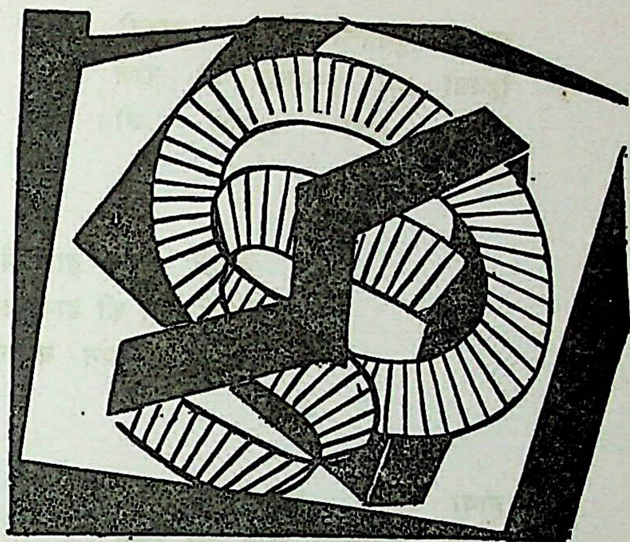
करो आरतो ए सासू जी
सोवण थाल सजाय, द्वार पै
बनड़ो आयो ए।

मगद[1] उछालो ए, बनी
जयमाल पर्हावो ए, द्वार पै
बनड़ो आयो ए।

गलै लगा ल्यो जी बाबा जी
करो खूब सतकार, द्वार पै
बनड़ो आयो ए।

---

१. मगद=लड्डू का एक प्रकार



द्वारचार हस्ती चढ्यो बर....

हस्ती चढ्यो बर आयो मेरी लाडो
द्वार बजी शहनाई ओ राज
मंगल कलस धराओ जी ।।

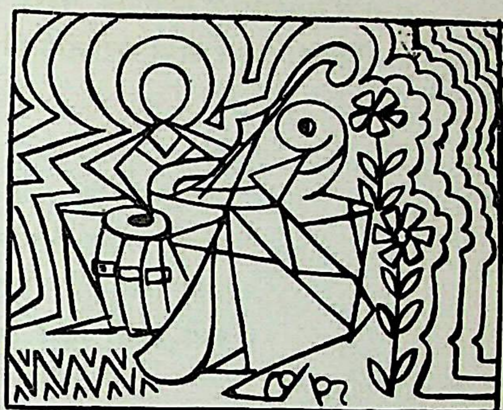
सजन सनेही सगा पावणा
देवै भोत बधाई ओ राज
स्वागत माल पर्हावो जी ।

सास सुमंगली करै आरतो
हिवडो हद हुलसाई ओ राज
मोती मणी लुटावो जी।

बनडो तोरण द्वार पै आकै
मारी नीम की डाली ओ राज
कुल को मान बधावो जी।।

हाथा में बरमाला लेकै
बनड़ी निरखण[1] आई ओ राज
सुगणा[2] गीत सुणावो जी।।

१. निरखण=निहारने २. सुगणा=शकुन



द्वारचार को गीत रोबीलो भाल

बनड़ै री रोबीलो भाल,
सासू ले सुवरण री थाल,
करै आरती तिलक तोरण द्वारै
भूवा बाई जी रतन मोहराँ वारै ।।

सेवरियै री लडियां सोवै बनडै री छिब[1]न्यारी
पेचै ऊपर किलंगी चिलकै हरख्या सै नर-नारी

गावै कामण मंगल गान,
होवै स्वागत सुगणी जान
करां आव भगत नौबत बाजै ।
घोड़ी घूंघरा बजावै नाचै साजै ।

---

१. छिव=छबि

हाथां मैं जयमाला ले कै बनड़ी मदरी[2] चाली ।
बनड़ो तोरण द्वार पै आ कै मारी नीम की डाली ।

आंख्या-आंख्या मैं कर बात
आसी सुख सुहाग री रात
बनी गल मैं बर माला घालै
बनो बनड़ी बिदा बिनां नहीं हालै[3] ।।

---

२. मदरी=धीरे-धीरे ३. हालै=हिले



मंडप गीत

आवो आवो मदरी चाल
बनी मंडवै[1] कै नीचे।

रंगभरी चूनड़ झिलमिल चिलक[2]
हाथ रो चुड़लो खन - खन खनकै
पायल बाजै बिछिया मुलकै
चालै सम्हल कै पल्लो[3] सरकै

चमक री बिंदिया भाल
बनी घूंघट नै खींचै।

बाबुल देवै दान बनी को
बनड़ो सिर माथै पै लेवै।
चिरजीवो या सुन्दर जोड़ी
दादी बाबोजी आसीस देवैं।

---

१. मंडवै=मंडप   २. चिलके=चमकै   ३. पल्लो=आंचल

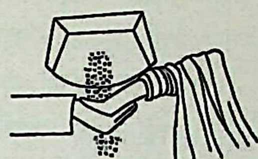
फूल खिल्या हर डाल
मावड़ बाड़ी[4] नै सींचै।

बनड़ो निरखै बनड़ी मुलकै
लेकै हाथ मैं हाथ।
फेरा लेवै गठजोड़ैं से
जुग जुग तक रो साथ।

बनी री मांग भरी बनो लाल
हथेली हाथां से भींचै[5]।

---

४. वाड़ी=घर-परिवार ५. भींचै=दवाना



खील-आंदला

म्हारी बाई री झोली में धान भरां, माँ,
झोली में खिल खिल धान खिलै ।।
म्हारी बाई रो रूप रिझावै ए माँ,
जीजो जी म्हारा झूम हिलै ।।

बाई आंदला[1] भर भर देवां ए सदा
थारै बावो जी रै महलां मोद[2] रह्‌वै ।
बडो बीरो हिवड़ै लगाई ए माँ,
बाई अनधन सैं भंडार भरै ।।

दूजो बीरो थानै दुलरावै ए माँ
बाई मान सदा म्हारी बेल करै ।।
मां जायो[3] मन मकरन्द भरयो
बाई सासरियै बणफूल खिलै ।।

नान्हो बीरो आंख्यां मैं नीर भर्‌यो
बाई बेगा - बेगा[4] आ ज्यो पीयरियै
हर्षित हो हर्ष हुलस करकै
बाई हरियापात अर खील देवै ।।

---

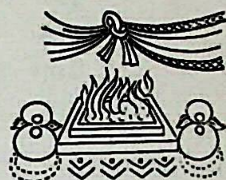
१. आंदला=अंजली २. मोद=आनन्द ३. मां जायो=भाई ४. बेगा-बेगा=जल्दी-जल्दी

सगला लाड लडावण भाई बीरा
बाई मुलक - मुलक थारो चाव करै ।।
वै तो लाड लडावै थारा ए घणा
बाई गोद घणीं[5] थारी बिलमावैं[6] ।

थानै देता रहवां ए म्हारो मान बढ़ै
बाई जोड़ी थारी हद सुख पावै ।।

⊛

५. घणी=बहुत अधिक ६. बिलमावै=मोहित करती है ।



फेरों को गीत

जुग जीवो जुगल जोड़ी मन भाई,
बाई पराये घर की हो चली।

फेरां में आई लाडली बाई,
दादी बाबो जी दुलराइया।
नानी मामी री प्यारी हद हँस बोली
भाई बीरां कै मन भाइया।

हीरां मोत्यां से बाई रो रूप सजायो
झिलमिल सोवै सोवण चूनड़ी
बनडै नै निरखै लाजै मनी - मन
लाजै लजावै चिलकै मूंदड़ी।

होठां पै लाली लालगुलाबी,
बीड़ो चबायो बंगला पान को।
माथै पै हिंगलू हाथां पै मैन्दी
चुड़लै में राचै रंग मान को।

पहलो तो फेरो बाई जद लीन्यो
भैनड़ भूवां होई उणमणी[1]।
आंख्या मैं चिलक्या हिवडै रा मोती।
हाथ्यां मैं राखी पलणै पली।

म्हारै आंगणियै की खेलण वाली
होई पराये घर की रंगरली[2]
जुग जीवो जुगल जोड़ी मन भाई,
बाई पराये घर की हो चली।

---

१. उणमणी=उदास २. रंगरली=प्रसन्नता

दूजो तो फेरो बाई जद लीन्यो
ताऊ चाचाजी निरखै बाग नैं।
बागां की कोयल बोलैगी इब कद
दीजे संदेसो उड़तै काग नैं।

ताई चाची बिसूरैं हिवड़ो पसीजैं,
देवैं आसीस तनैं मनरली[3]।
जुग जीवो जुगल जोड़ी मन भाई
बाई पराये घर की हो चली।

तीजो तो फेरो बाई जद लीन्यो
दादी बाबो जी हद सीख दी।
बाई सासरियै में बोलज्यो[4] मीठी
हेंठी[5] कराज्यो मत[6] माय की।

हुकमा में रह ज्यो सास ससुर कै
बूढ़ सुहागण होज्ये लाडली
जुग जीवो जुगल जोड़ी मन भाई
बाई पराये घर की हो चली।

चौथो तो फेरो बाई जद लीन्यो
मावड़ आख्यां झड़ लागिया
बन खंड की मैना होई पराई
दूध नै लाजै बड़ भागिया[7]

आंख्यां मैं आसूं रोक्या न रुकै
निकलै आसीस हिवसूं भली।
जुग जीवो जुगल जोड़ी मन भाई
बाई पराये घर की हो चली।।



३. मनरली=हृदय में वसी हुई   ४. बोलज्यो=बोलना   ५. हेंठी=बदनामी
६. मत=नहीं   ७. बड़भागिया=भाग्यशालिनी।



फेरां के बाद को गीत

ले कै फेरा पल्लै गठ जोड़ो बांध
बाई जंवाई लारै[1] चाली।

रहसी बाई थारी रतनारी मांग
लाडो[2] नै मावड़ दोरां[3] पाली।

उडी बाबुल रै बागां री पाली कोयल
करी वै घणी रखवाली।

उमग्यो दादी जी रै गहरो हिवडै हेत
आसीसां झोली बाबो घाली।

---

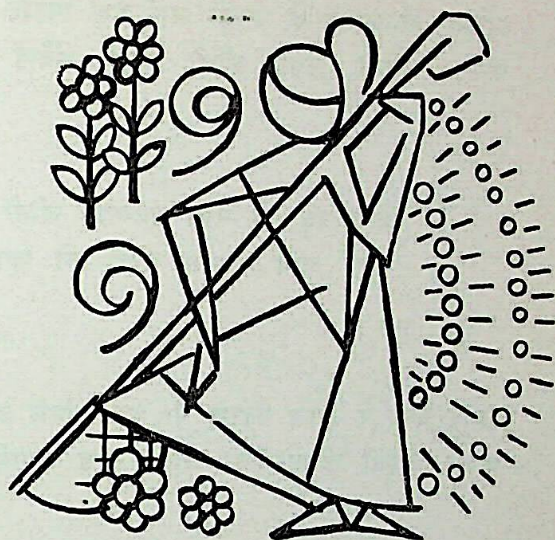
१. लारै=पीछे २. लाडो=लाडली ३. दोरां=बड़ी मेहनत से

ताई चाची जी लुटावै मणी म्होर
ताऊ चाचो कही ना टाली ।।

भूवा बाई, भैणां हद सुख पावै
सींची बाडी[४] नै ज्यूं माली

जुग जीवै म्हारी सुगणी बाई री जोड़ी
सहेल्यां गावै दे दे ताली ।।

४. वाड़ी=बगीची ।



कंवर कलेवो

कंवर कलेवो कसर मवो जीमो लाड जंवाई ओ राज।
घणै चाव से सकल सुहागण गाई आज बधाई ओ राज।।

थाल सजाकै ताई चाची चौकी उपर मेलीजी,[1]
गाज्या सुगणा गीत सुहावण बाजी नौबत हेली[2]जी,

थारै लारै - लारै आया दोस्त - भायला[3] भाई ओ राज
कंवर कलेवो केसर मेवो जीमो लाड जंवाई ओ राज।

सासू हरख हरख कै निरखै हिवडै हेत जतावै जी।
साला साली जीजो जी नै छेडै ओर सतावै जी

---

१. मेली=रक्खी २. हेली=बड़ा मकान ३. दोस्त-भायला=यार-दोस्त

शरमा कै मुस्का कै बनड़ो खाई एक मिठाई ओ राज
कंवर कलेवो मेवो जीमो लाड जंवाई ओ राज ।।

भाग बड़ा थे भला पधारया जीमो कंवर कलेवो जी
थारी आव - भगत करणै को म्हानै अवसर देवो जी

चतर बनी रै आज कारण या घड़ी मंगल आई ओ राज
कंवर कलेवो केसर मेवो जीमो लाड जंवाई ओ राज ।।





जंवाई

आवो जी आवो जंवाई[1]
म्हारै महलां मैं आवो
थे तो आवो जी
रहवो थै म्हारै महलां पावणा[2] जी ।। थे तो...

आतां ही थारै जंवाई
म्हारै दिवलो सो दीपै[3]
थे तो आवो जी
आवो जंवाई म्हारे पावणा जी ।। थे तो...

---

१. जंवाई=दामाद २. पावणा=मेहमान ३. दीपै=प्रकाशित

बाबा जी लाड जंवाई
थानै हिवड़ै में राखै
वै तो राखै जी
राखै वै थाने दिन दस पावणा जी ।। थे तो...

दादी जी थानै जंवाई
आंख्या में रमावै
थे तो रमज्यो जी
रमज्यो जंवाई हिवड़ै पावणा जी ।। थे तो...

ताऊ जी थानै जंवाई
नित म्होरां सै तोलै
वै तो तोलै जी
बौलै थे रहवो सुवरण पावणा जी ।।

ताई जी थानै जंवाई
पकवान जिमावै
थे तो जीमो[४] जी
जीमो जंवाई प्यारा पावणा जी ।। थे तो...

---

४. जीमो=भोजन करो

चाचा जी थानै जंवाई
पोशांका[5] पहरावै
थे तो पहरो[6] जी
पहरो जंवाई सुगणा[7] पावणा जी।। थे तो...

चाची जी थानै जंवाई
नवरतन पहरावै
थे तो पहरो जी
पहरो जंवाई हार जड़ावणा[8] जी।। थे तो...

भूवा जी ल्यावै जंवाई
गुल-फूलड़ा ल्यावै
वे तो ल्यावै जी
ल्यावै गजरा थारै मन भावणा जी।।

फूफा जी पेचो जंवाई
रंग केसर ल्यावा
थे तो मेलो[9] जी
माथे पै पेचो किलंगी धारणा जी।।

---

५. पोशांक=कीमती वस्त्र ६. पहरो=पहनो ७. सुगणा=शुभ
८. जड़ावणा=जड़ाऊ ९. मेलो=रखो

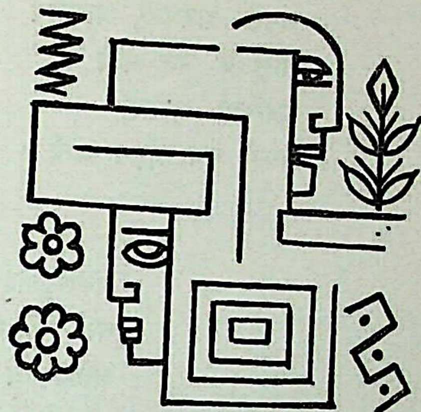
सुसुरो जी थानै जंवाई
हथेल्यां पै राखै
वै तो राखै जी
राखै पलकाँ की छाया पावणा जी ।।

सासू जी थानै जंवाई
सिर माथै पै राखै
थे तो खेलो जी
खेलो जंवाई आंगण खेलणा जी ।।

साला जी थानै जंवाई
रस पान खुवावै
थारै राचै जी
होठा में राचै पान सुहावणा जी ।। थे तो...

आसीस देवां जंवाई
थारो लाड़ लड़ावाँ
सुख पावो जी
बाई नै अमर सुहाग रा देवणा जी ।।





जंवाई

मिठ बोल्या, मिठ बोल्या
जंवाई अलबेला,
हिवड़ो हुलसाई
आँगण सुगणी शहनाई ।।

बनो आयो, बनो आयो
दादसरा[1] मन भायो
मोहरां भी लुटाई
सब सखियां गाई बधाई ।।

जंवाई रतनारो, रतनानरो
नजर भी उतांरो
जतन करवाई,
सुसरो जी तिलक लगाई ।

---

१. दादसरा=दादाससुर

जंवाई शरमावै, शरमावै
सासू कै मन भावै
नजरियाँ झुकाई
साली सब छेड़ण आई ।।

जंवाई जद बोलै, जद बोलै
बनी को मन डोलै
आँख्या में बतलाई
या जोड़ी सब मन भाई ।।



जंवाई

जंवाई म्हार हिवड़ै भावो जी
जंवाई जी बागाँ आवो जी
जंवाई मन आगण नाच्यो मोर
सघन घन बणकै छावो जी ।। जंवाई—

जंवाई थे तो सरवर न्हावो जी
जंवाई रस घोल्या फूल गुलाब
जी केसर तिलक लगावो जी ।। जंवाई—

जंवाई मन मोद[1] मनावो जी
जंवाई म्हारै पाकी लाल अनार
बना जी रलमिल खावो जी ।। जंवाई—

जंवाई म्हानै गीत सुणावो जी
जंवाई थानै हीन्डो घाल[2] झुलावा
बना जी थे बनी नै झुलावो जी ।। जंवाई—

जंवाई थे महलां में सोवो जी
जंवाई सुख सेज बिछी कचनार
बना जी थे हद सुख पावो जी
जंवाई म्हारै हिवड़ै भावो जी ।।

१. मोद=आनन्द २. घाल=डाल ।



जंवाई

मोल्यां स मोल अमोल,
जंवाई प्यारा लागो जी ।।

म्हारै बाबो जी र चाव जंवाई प्यारा लागो जी ।
दादी जी लाड़ लड़ावै बना जी प्यारा लागो जी ।

कसर पेचो सुवरण जामो[1]
कमर कसूंबी[2] रंग ।।
राजकुंवर सो रूप बना जी
चाँदी चिटियो[3] संग ।।

ताई उतारै नजर जंवाई प्यारा लागो जी ।
ताऊ जी रै मोद जंवाई प्यारा लागो जी ।

---

१. जामो=शेरवानी जैसा लम्बा कोट २. कसूंबी=लाल ३. चिटियो=छड़ी ।

मीठा बोलै बोल, कंवर जी,
फूल खिल्यावै राज ।।
म्हारै भवन मै आता ही
सूरज उग्यावै राज ।।

भूवा जी म्होर लुटावै जंवाई प्यारा लागो जी ।
फूफा जी बाँटे बधाई जंवाई प्यारा लागो जी ।।

होठां रचियो पान
कंवर कै लाली छाई जी ।
सब गुण रूप निधान
लाडला चतर[४] जंवाई जी ।

सुसरो जी गलै लगावै जंवाई प्यारा लागो जी ।
सासू जी देवै आसीस जंवाई प्यारा लागो जी ।।

●

४. चतर=चतुर ।



सजन-गोंठ

म्हारा समधी जी प्यारा पावणा
थारी भोत करां मनवार समधी जी जीमल्यो[1]।

दादी बाबो जी नगर सजाइयो
बणवायां व्यंजन रसदार। समधी जी जीमल्यो ।।

ताऊ चाचा जी आव भगत[2] करै
पहरावै थानै फुलडां रो हार ।। समधी जी—

सारी साथ सहेल्यां सुर भरी
सुणावै थानै रस भरी गाल ।। समधी जी—

---

१. जीमल्यो=भोजन करे २. आवभगत=स्वागत-सत्कार।

आई साँख जलेबी रूपाली
थारो मुंह भर द्यां रस धार ।। समधी जी—

थे तो पकवाना पर कूद पड़्या
कर दियो थे तो भीषण वार ।। समधी जी—

समधण धमकावै नैणा सूं
थे तो भूल्या जी थारो भान[3] ।। समधी जी—

३. भान=सुधबुध ।

सजन गोठ का गीत

सजन सनेही प्यारा पावणा पधारो।
सरस गुलाब रा फूल बिछाया।
तोरण द्वार में मोती लगाया।
इत्तर सुगंध सूँ आँगण सीच्यो
मंगल कलस पै दीप जगाया।

स्वागत प्रिय सत्कार तिहारो।
सजन सनेही प्यारा पावणा पधारो।।

जीमो जी बिबिध प्रकार का व्यंजन
दादी बाबो जी कै मन रंजन[1]।
बनड़ै का बाबा जी आवो बिराजो
साँख जलेबी[2] को करद्यो भंजन[3]।

देबी देवता मना बिसारो।
सजन सनेही प्यारा पावणा पधारो।

सभी सगी जी सै लाड लडावै
बनी की ताई कचोड़ी जिमावे
म्हारा सगा जी मुख नै खोलो
रसगुल्ला सारा ताऊ जी खुवावै।

बनै कै चाच नै मोदक प्यारो।
सजन सनेही प्यारा पावणा पधारो।।

पिश्तै की बरफी जेठजी नै द्यो
थाल जिठाणी को चाची जी भरद्यो
बनड़ी का चाचा जी केसर पाक नै
सगलै[4] बरात्याँ की थाली में धर द्यो।

---

१. रंजन=प्रसन्नता २. साँख जलेबी=सोने-चाँदी के वर्क से लिपटी बड़ी जलेबी
३. भंजन=भोजन करना ४. सगलै=सभी

भाई बीराँ मन आनन्द धार्यो ।
सजन सनेही प्यारा पावणा पधारो ।।

चन्द्रकला दूजै जेठ नै भावै
जिठाणी जी बस दही बड़ा खावै
भुवा जी बनड़ी की हरखीं[5] डोलै
फूफा जी परसै पापड़ ल्यावै ।

आनन्द मंगल कारज होरयो ।
सजन सनेही प्यारा पावणा पधारो ।।

बनै की सगली भैणा रानी
जल जीरै को पीवै पानी
मिश्री कलाकन्द और पेठा
नौरतनी ल्यो चटनी धानी ।

लाड जंवाई अमोल्यो[6] म्हारो ।
सजन सनेही प्यारा पावणा पधारो ।।

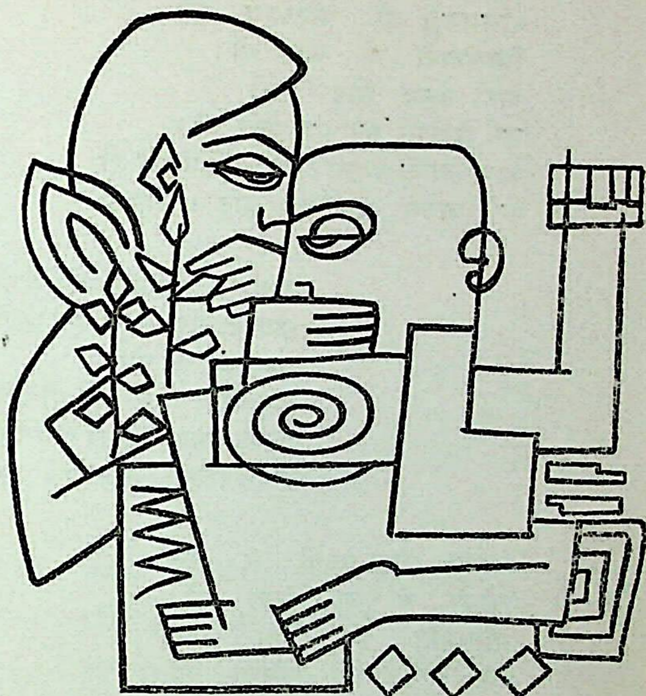
लाड बनो बनड़ी के सागै
भोजन भोज करै हद लाजै ।
सास ससुर जी निरखे मुलकै
लाडला साला जी बैठ्या सागै ।

भाग बड़ा प्रिय आगम थारो ।
सजन सनेही प्यारा पावणा पधारो ।



(नोट :—समधीजनों के नाम आवश्यकतानुसार जोड़ें)

५. हरखी=प्रसन्न होकर ६. अमोल्यो=अमूल्य ।



सगां को सीठणो[1]—वाह-वाह ब्यावण जावांगा

सभी तय्यारी करण लागगा लाड बनै ने ब्यावण की।
बड़े सहर में धूम मची है लाड बनै नै ब्यावण की।

ढोलूमल जी ढोल बजाकै
धूम मचाई ए, कै ब्यावण जावांगा
वाह, वाह, ब्यावण जावाँगा
लाडबनी कै साथ बनै नै ब्यावण जावाँगा
कै धूम मचाई ए।।

ढोलूमल जी लाड़ लडाके
टाली जी नै बोल्या जो।
ठीक टेम[2] सै सगली त्यारी होणी चाहे लाडो[3] जी
मेक अप को सामान साथ मैं लेता ज्याजो जी,
कै ब्यावण जावांगा।। वाह, वाह।।

---

१. सगां को सीठणो—समधी के साथ व्यंग-विनोद २. टेम—समय ३. लाडी—दूसरी पत्नी

गोलूमल जी प्लेटफार्म की
जिम्मेदारी ले ली थी।
गाड़ी टेसन[4] छोड़ चली
पर टिकिटाँ घर पर मेली थी।
कार चलाकै अगली टेसन गाड़ी पकड़ी जी
कै ब्यावण जावाँगा। वाह । वाह ।।

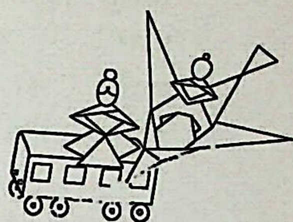
मालरोड पर मटकू बाबू छैला बणकै घूमै जी
हाय डार्लिंग, कहकै एक गोरी को पल्लो छूवै जी
मटक बहू जी पीछै से
जद चोरी पकड़ी जी, तो बोल्या बाबू जी-
"हाथ लगा के म्हेतो प्रिये डिजाइन देखे था।
कै ब्यावण जावांगा। वाह । वाह ।।

चटकू जी पुच्ची नै लेकै
ज्वैलर कै जा पूंच्या जी।
भाँत-भाँत का गैणा देख्या
पंण माडल पै रीझ्या जी।
हाथ धरयो तो माडल डाट्यो
"क्या करते हो जी"।
के ब्यावण जावाँगा। वाह । वाह ।।

बहन कटोरी छन्नी बाई
उड़ती फिरती डोलै जी।
घर में आँको[5] मन नहीं लागे
जी चाहे सो बोलै जी।
तीन सिनेमा का शो देखे
फिकर ब्याह की जी
कै ब्यावण जावाँगा। वाह । वाह ।।

---

४. टेसन=स्टेशन ५. आँको=इनका।



सीठणो—रंग होली को

म्हारा समधी जी आवै प्लेन सूँ
ऐ म्हारी समधण गाड़ी सैं आवै
बनी कै ब्याव में ए रंग होली को माच्यो रे ।।

चाचा ताऊ भैण-भणेई-भूवा बाई साथ ।
टोलू मल जी टाली देवी दोनू दिन अर रात
चालै दो गज पीछे-साब कै,
ए इठलाती पल्ला झाड़
बनी कै ब्याव में ए रंग होली को माच्यो रे ।।

छन्नी और कटोरी बाई
मेकअप करके आई जी ।
काजल होठा रंग रचायो
लाली आंख्या सारी[1] जी ।

शरमावै दिसावरी[2] रूपसी
ए दरसावै[3] विदेसी चाल
बनी कै ब्याव में ऐ रंग होली को माच्यो रे ।।

---

१. सारी=लगाई २. दिसावरी=शहरी ३ दरसावै=दिखाती है ।

बिगड़ै दिल का छैल छबीला
दोस्त भायला[4] साथ।
बनड़ी की सहेल्यां डरगी,
बम भोलै का नाथ।

बनो ल्यायो भूत की टोली
ए आयो पचरंग पेचो बाँध
बनी नै ब्यावणे ए रंग होली को माच्यो रे ।।

ढोलूमल और गोलूमल जी
भाँग की गोली खाली थी।
मोटर में सामान धर दियो
अर ट्रक में जा बैठ्या जी।

कालख कपड़ा में लागगी ए
अर लाजै कुली को साथ
बनी कै ब्याव में ए रंग होली को माच्यो रे ।।

मटकू ढोवै नकली जुड़ो
मटकी नचावै नाच।
चटकू घूमै सैन्डल लाद्या[5]
पूच्ची बहू रै साथ।

सेवा घर वाली की करै
ए नही लाज सरम से काम
बनी कै ब्याव में ए रंग होली को माच्यो रे ।।

४. भायला=दोस्त   ५. लादया=उठाये हुए।



सीठणो—जोरू का गुलाम

समधी जी म्हारा जोरू का गुलाम।
समधण म्हारी फैशन वाली
ये धोती परसाद।
समधन म्हारी नरम कचोरी
ये कद्दू को साग।

लगवा कै आया जोरू की लगाम
समधी जी म्हारा जोरू का गुलाम।

बाल उड्या सिर गंजो आको
समधण फेरै हाथ।
लिखै समय पर काम करण को
हुकुम-पत्र लिय साथ।

समधण नै करके आया परनाम।
समधी जी म्हारा जोरू का गुलाम।

चंचल चितवन वाली समधण
ये भोंदू महाराज।
शरमावै ये नीचो देखै
गोरी चलावै राज।

कलजुग में यो के होयो[1] मेरा राम।
समधी जी म्हारा जोरू का गुलाम।

रसगुल्लै को रस टपका के
कुड़ते की छिब[2] बिगड़ी।

दही बड़ै ने जीभर खायो,
समझ रसीली रबड़ी।

समधण को कर दियो नाम बदनाम।
समधी जी म्हारा जोरू का गुलाम।।

---

१. यो के होयो=यह क्या हुआ ? २. छिब=छवि



सीठणो—समधण कलकतिया

समधण कलकतिया शरमीली
चमचम रस गुल्लै सी बोली ।।
आशुन[1] बोलै बोशुन[2] बोल
जेई[3] तो बोलै अमार[4] ई ।।
समधण कलकतिया शरमीली ।।

सेन्दुर माथेर[5] बाली कानेर[6]
चाबी पल्ले में लटकाती ।।
समधण कलकतिया शरमीली ।।
रशो गोल्ला खाती जाव
अती सुन्दर बोलै रसगुल्ली ।।
समधण कलकतिया शरमीली ।।

---

१. आशुन=आओ २. बोशुन=बैठो ३. जेई=वो ४. अमार=हमारे
५. माथेर =माथे ६. कानेर=कान

जौल[7] ये खावैं फूल लगावै
साड़ी पहरै लम्बकली[8] ।।
समधण कलकतिया शरमीली ।।

समधी सैं नैंण चुराके बोलै
आमी तुमी[9] भालो[10] भाली ।।
समधण कलकतिया शरमीली ।।

बड़ै बजार सैं चौरंगी तक
घुम्याई[11] चढ़ कै डोली ।।
समधण कलकतिया शरमीली ।।



७. जौल=पानी ८. लम्बकली=लम्बीवाली ९. आमी-तुमी=हम-तुम
१०. भालो=अच्छा ११. घुम्याई=घूम आई ।



सीठणा–समधण मदरासी

ले बात बात मैं अंगड़ाई
समधण मदरासी मन भाई।

इडली खावै साँभर पीवै
अड़म बड़म खावै दोसाई
समधण मदरासी मन भाई

इंगे जावै बिंगे जावै
रंगम - वंगम पहराई
समधण मदरासी मन भाई।

बस्त्रम पट्टम पहर ओढ़ कै
भारत नाट्यम कर आई।
समधण मदरासी मन भाई।।

अपलम चपलम बोलै चालै
अल्लम - गल्लम समझाई।
समधण मदरासी मन भाई।।



बम्बईवाली समधण

बम्बई वाली समधण आला।
नको - नको[1] कोई गड़बड़ झाला।

इकड़े[2] ते आवै तिकड़े[3] ते जावै
संडे[4] नै जावै जी खंडाला। ऐ हो बम्बई...

पवाई लेक पै समधी जी सागै
सैर करै जी बण बनमाला। ऐ हो बम्बई...

---

१. नको-नको=नहीं-नहीं २. इकड़े=यहाँ ३. तिकड़े=वहाँ ४. संडे=इतवार

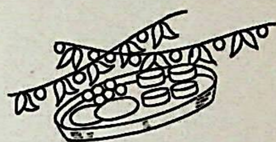
जूहू पै घूमै होटल मैं जावै
चढ़ जावै लिफ्ट सै त्रै-दस माला ।। बम्बई...

खोपरा अणि[5] डाब ही भावै
पाइजें[6] भेलपुड़ी मैं मसाला ।। बम्बई...

चौपाटी घूमकै शापिंग मैं ल्याई
बटाटा भाजी[7] ने रींगणा[8] काला ।। बम्बई..

---

५. अणि=और ६. पाइजे=चाहिये ७. बटाटा भाजी=आलू सब्जी
८. रींगणा=बैंगन ।



सीठणो—धम-धम नाचै रे

समधी समधण धम धम नाचै रे,
नाच - नाच कै नैणां रा नजारा मारै रे।

ऐंऽऽऽ नाच-नाच कै दोहरी होगी पड़्यो कमर में लोच
आडी टेढ़ो पड़ी थाप[1] तो पड़ी पैर में मोच।

समधण आड़ी टेड़ी नाचै रे
नाच-नाच कै घाघरियै सै धूल बुहारै रे।।

ऐंऽऽऽ समधण घूमी जोर से तो समधी जी चकराया
आँख मीच कै लूम-झूमगा[2] चोखा[3] रास रचाया।

---

१. थाप=ताल २. लूम-झूमगा=लटक गये, ३. चोखा=अच्छा

समधी बांथ घालकैं[४] नाचै रे
नाच-नाच कै समधण उपर म्होराँ वारै रे।

ऐंऽऽऽ घुड़साली घूघरिया बांध्या कूद-कूद कै नाचै
अल्ला-पल्लां की सुध भूली सगा-सोईं[५] मन राचै।

समधण बेसुध गावै नाचै रे
नाच देख कै छैला सगला[६] लाग्या लारै रे।



---

४. बांथ घालकै=बाहों में भरके ५. सगा-सोई=समधी सगला=सभी।



बिदा-गीत

आँगण सूनो कर चली ऐ बनी,
चढ़ प्रीतम री पालकी ऐ बनी।
बिलखै[1] थारी माय घणेरी[2] ओल्यूं आवै जी।।

सिसकै सूनो बाग ऐ बनी
रोतो सरबर पाल
परदेसां कोयलड़ी उड़गी
सूनी करगी डाल।

इब कुण गासी गीत ऐ बनी,
चढ़ प्रीतम री पालकी ऐ बनी
रोवै थारी सहेल्यां बानै ओल्यूं आवै जी।।

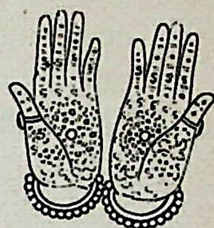
---

१. बिलखै=रोवै २. घणेरी=बहुत अधिक

बाबुल बाड़ी सींचिया जी बनी
बीरो करी मनवार[3]।
परदेसी झोली भर चाल्यो
फूल खिल्या कचनार।

तीजां फीकी लागसी ऐ बनी
चढ़ प्रीतम री पालकी ऐ बनी
भैनड़ हेलो[4] मारसी ऐ थारी ओल्यूं आवै जी।

३. मनवार=इच्छापूर्ति ४. हेलो=पुकारना।



ओल्यूं (बिदा-गीत)

ओ जी ओ गोरी रा लसकरिया[1]
लारे लारे डोली लेयर[2] चाल्या जी ढोला,
ओ जी ओ बाई रा मनबसिया
हिवड़े सूं प्यारी थाने सूंपी ओ ढोला।
बागां री मैना कित उड़ चाली जी ढोला।। ओ जी...

लाड जंबाई बाई ले चाल्या
बाई री ओल्यूं म्हाने आवै जी ढोला।।
ओ जी ओ बाई रा मनबसिया
भायां री मैंनड़ थानै सूंपी[3] ओ ढोला।। ओजी...

आलै दिवालै बिखरया खेलणा
सूनो तो होयो आंगण बाग जी ढोला।
ओ जी ओ बाई रा मनबसिया
बाई री भैणा रैगी एकलड़ी[4] ढोला।। ओ जी...

आंसू तो पूंछै मावड़ हेत सूं
लीनी छै हिवड़ै लगाय जी ढोला।
ओ जी ओ बाई रा मनबसिया
दीन्ही छै मोत्यां बिचली लाल जी ढोला।।

---

१. लसकरिया=दूल्हा २. लेयर=लेकर ३. सूंपी=सौंपी ४. एकलड़ी=अकेली

मूंद किबाड़ी बाबुल हद रोया
हिवड़ै रो जिवड़ो निकल्यो जावै जी ढोला,
ओ जी ओ बाई रा मनबसिया
पाली पोसी सागै रिध-सिध दीन्ही ओ ढोला।

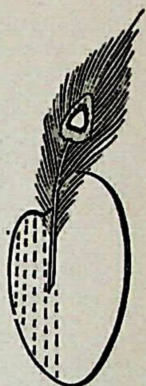
दादी बाबो जी देवै आसीसां
डब-डब भरिया छै नैण जी ढोला।
ओ जी ओ बाई रा मनबसिया
सूण[५] भला तो थानै होवै जी ढोला।
ओ जी ओ गोरी रा लसकरिया
लारै लारै डोली लेयर चाल्या जी ढोला।

५. सूण=सगुन।

गणगौरां

का

गीत



जुवांरा हर्‌या भर्‌या

गणगौरां रो रै तिव्हार[1]
जुवांरा[2] हर्‌या भर्‌या।
बाई रो अमर सुहाग
जुवांरा हर्‌या भर्‌या।।

मैंदी रंग सुरंगो राच्यो
रोली कुमकुम रो रंग साँचो
कार्जलियो पलकां में रीझ्यो
होठा रचियो पान।।
जुवांरा हर्‌या भर्‌या।

---

१. तिव्हार=त्योहार २. जुवांरा=गेहूँ की पौध

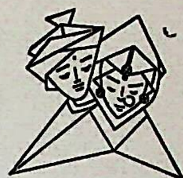
चुड़लो लाल अबीरी चिलक्यो
मैंमद[3] रखड़ी[4] रो नग भलक्यो
पायलड़ी पैरा पै रीझी
नथ नै आवै लाज ।।
जुवांरा हर्‌या भर्‌या ।

फुलड़ा ल्यावो भर कै झोली ।
चौक पुरावो गोबर गोली ।
गौरां ईसर नै मिल पूजां
साथ सहेल्यां रै चाव
जुवांरा हर्‌या भर्‌या ।।

●

---

३. मैंमद=माथे का गहना ४. रखड़ी=कलाई का गहना ।



गणगौरां रो गीत

ईसर जी रे पेचै उपर,
गौरा रो मन मोयो[1] राज,
केसरियो रंग राच्यो जी।।

कानी राम जी री किलंगी उपर
बनड़ी रो मन रीझ्यो राज
फागणिये रंग माच्यो[2] जी।।

गौरां जी री नग नथ बेसर
हीरां सैं जड़वाई ओ राज
पारखी सब मिल जांचो जी

गलै सतलड़ी काना कुंडल
चुड़लै री छिब न्यारी ओ राज
हिगलू रो रंग सांचो जी।

---

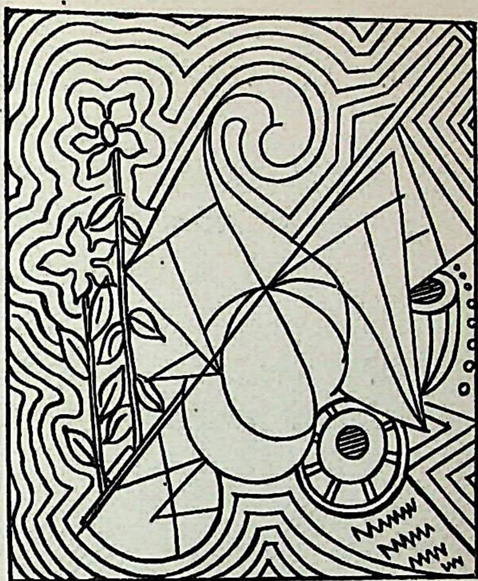
१. मोयो=मोहित किया २. रंग माच्यो=धूम मची

सुबरण पायल मांडयोडै[3] पग
रुनझुन रुनझुन बोलै ओ राज
रलमिल धूमर नाचो जी

सोवां बाई रोवां बाई
मालण[4] सागे आई ओ राज
पांच्यां नै मिल पूजो जी।

---

३. मांडयोडै=मेहन्दी लगे हुए ४. मालण=मालिन।



गणगौरां रो गीत

गोरां द्यो आसीस रोवां बाई पूजै छै गणगौर
पूजै छैं गणगौर सोवां बाई नाचै बन रा मोर

आई थारै द्वार गोरजा खोलो आज किंवाड़
खोलो आज किंवाड़ करां म्हे थारा मंगलचार
थारा मंगलचार भरो बाबुल रो थे भंडार।

गोरां जी रे माथै सोवे रतन जड़ाऊ बोर
गोरा द्यो आसीस सोवां बाई पूजै छै गणगौर।।

बाबुल रो भंडार भरो मावड़[1] नैं अमर सुहाग,
कान कंवर सो बीरो द्यो, लारै[2] भावज रो साथ
साथ भणेई[3] भैनड़ मांगा नगर सरावै भाग।

१. मावड़=मां २. लारै=पीछै ३. भणेई=बहनोई

ईसर जी नै गोरां बाई बांधी प्रेम री डोर
गोरां द्यो आसीस रोवां बाई पूजै छै गणगौर।

लाड लड़ावण भूवा दीज्यो सुवरण रो घर बार
मेंदी काजल रोली टीको गल फुलड़ारो हार
आओ म्हे सब रलमिल पूंजा गोरां रो त्योहार

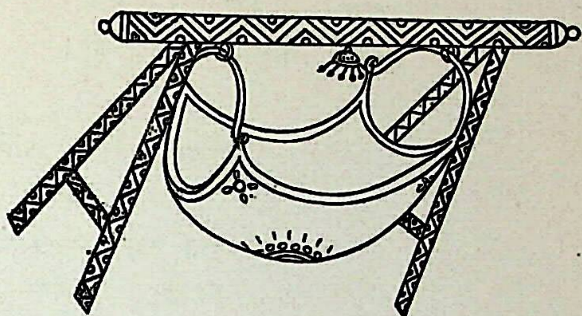
ओढ़ू चूनड़ छांटा देकै चिरचांगा[४] गणगौर
गोरां द्यो आसीस रोवां बाई पूजै छै गणगौर।।

४. चिरचांगा=देवता को रोली लगाना।

पुत्र-जन्म

का

गीत



पोमचो पीलो पीलो जी

हलदी रंग सुरंग
पोमचो[1] झीणो झीणो जी,
पोमचो पीलो पीलो जी ।।

पीलो सोवण पोमचो सज
ओढ़ सुहागण नीसरी[2] जी
पूजण पणघट बा गई
मिल बांटा लाडू मीसरी जी

हिवड़ो हद हुलसावै
पोमचो पीलो पीलो जी ।।

सथिया[3] माड्या नणदल बाई
चौकसी मांगे देवरियो ।
बड़ोड़ी[4] जिठाणी तानो मारे
लाड़ लड़ावै सासरियो ।

१, पोमचो=बेटे की माँ की ओढ़नी २. नीसरी=निकली ३. सथिया=स्वस्तिक
४. बड़ोड़ी=बड़ी ।

सुगणा सूण मनावै
पोमचो पीलो पीलो जी।

सुसरो भेली बांटिया जी
आनन्द उमग्यो जाय।
प्रीत भंवर म्हारो पेचो बांधे,
मावड़ नेग उढ़ाय।

सतरंगियो बंधोज
पोमचो पीलो पीलो जी।।

पालणै किलकै कुल उजियारो
बांधो जी बन्दनवार।
मदरी मदरी चाल जच्चा राणी
आँगण मंगलचार।

चिलकै घूंघट सूं लिलार[5]
पोमचो पीलो पीलो जी।।

---

५. लिलार=माथा।



सलूणां सथिया

सलूणां[1] सथिया माँडो जी
नणद बाई थापो सुघड़ रचावो।

कुल दीपक कुल जोत जगाई,
सुगणा गीत सुणावो।

न्हाय धोय पाटै जद बैठूं,
पीलो नेग उढ़ावो।

गाजै - बाजै कूवो पूजूं,
हलवां चाल चलावो।

१. सलूणां=शुभ

डचोढ़ी[२] मंगल कलस धरावो,
बंदनवार बंधावो।

मन चाहील्यो नेग रुकाई,
बीरै रै मन भावो।

२. डचोढ़ी=प्रवेश द्वार।



गीगो ज्यायो जी

सोनै को बाज्यो थाल आनन्द हद छायो जी।।
नांदीयो दिन आज या गोरी गीगो ज्यायो जी।।
राजिन थे बेगा जाय दाई नै बुलवायो जी,
पिछोकडियै[1] री नीम डाली ने मंगायो जी,

१. पिछोकडियै=पिछवाड़े

देवर जी संदेसो थे दादो जी नै पुंचायो[2] जी ।।
सोनै को बाज्यो थाल आनन्द दद छायो जी ।।

सूंठ बदाम सेक ढक ल्यावो जी,
तातो तातो दूध केसरियो प्यावो जी,

सासूजी करै चाव आनन्द मनायो जी ।।
सोनै को बाज्यो थाल आनन्द हद छायो जी ।।

सथिया सुघड़ नणद बाई माँड़या जी,
पीलै पीलै पोमचैं पै जाल मावड काड़्या जी,

सहेल्यां रल मिल शुभ गीत सुणायो जी ।।
सोनै को बाज्यो थाल आनन्द हद छायो जी ।।

---

२. पुंचायो=पहुँचाया ।